खुले मुह और दीपक के सामने नहीं पढना चाहिये।

॥ जिनाय नमः ॥

सामायिक-प्रतिक्रमण सूत्र

(विधि सहित)

संग्रह कर्त्ता

कुम्भट विजयमल जैन

(जोधपुर निवासी)

प्रकाशक—

सिरहमलजी लालचंदजी

पीपाड़ निवासी

(मारवाड़)

गुलेदगढ़

मूल्य ज्ञानवृद्धि
प्रथमावृत्ति
प्रति ५००

卐

वीर सम्वत् २४५०
वि० सम्वत् १९८१
ई० सन् १९२४



स्वर्गवासी सेठ सिरेमलजी मुथा पीपाड़ निवासी

प्रस्तावना ।



प्रिय बन्धुओं ! देखो जैन धर्म की कैसी अच्छी रीतियें है और ज्ञानियों ने कैसे कैसे सहज रस्ते पापसे बचने के लिये बताये हैं ऐसा विचार कर मनुष्यमात्र को चौदह नियम, बारह व्रत और सामायिक प्रतिक्रमण अवश्य धारन करना चाहिये क्योंकि इनके करने से पाप न्यून होजाता है ।

प्रिय भाइयों ! ऐसा योग पूर्ण पुण्य से मिलता है। मनुष्य जन्म, आर्य्य क्षेत्र, उत्तम कुल जैन धर्म यह सब पाया है तो जो बने सो करलो, बारबार ऐसा योग मिलना कठिन है ।

आपका:—

सिरेमल लालचंद मूथा.

पीपाड़ निवासी (मारवाड़)

गुलेदगढ

॥ श्री जिनायनमः ॥

सूचना ।



यह पुस्तक यत्न से रखें

जयणां से बांचें ।

काना, मात्रा, अनुस्वार, ह्रस्व, दीर्घ अशुद्ध टूटी लिख्यो हुयो, विद्वान कृपाकर सुधार लेवें प्रसिद्धकर्ता की नम्र विनती है ।

पुस्तक के कई पृष्ठों के नीचे छोटे टाइप में सूचना है पाठकगण उनका उपयोग करें । पुस्तक में यदि कोई अशुद्धि रहगई होवे तो पाठक गण शुद्ध कर पढेंगे और सूचित करेंगे, जिससे आगामी संस्करण में ठीक जावेंगी । विजयमलजी जैन को धन्यवाद है जिन्होंने इस का संग्रह किया है ।

आपका:—

सिरेमल लालचंद

पीपाड़ निवासी (मारवा

गुले

अनुक्रमणिका।





* श्रीवीतरागाय नमः *

श्री सामायिक-प्रतिक्रमण सूत्र

अथ श्री नवकार मंत्र प्रारम्भ ।

णमो अरिहंताणं । णमो सिद्धाणं । णमो आयरियाणं । णमो उवज्झायाणं । णमो लोए सव्व साहूणं । एसो पंच णमोकारो । सव्व पावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं । पढमं हवइ मंगलं ॥ इति ॥

तिक्खुत्तो का पाठ ।

तिक्खुत्तो (तीनवार), आयाहिणं (बे हाथ जोड़ी ने जीमणा कानथी डाबा कानताई), पयाहिणं (प्रदक्षिणा करीने), वंदामि (नमस्कार करता हूं), नमंसामि (मस्तक नमायने नमस्कार करता हूं), सक्कारेमि (सत्कार देता हूं), सम्माणेमि (सन्मान देता हूं), कल्याणं (कल्याणकारी), मंगलं (मंगलकारी), देवयं (धर्म देव समान), चेइयं (छ काय का जीवने सुखदायक), पज्जुवासामि (मन वचन काया करी ने सेवा करता हूं), मत्थएण वंदामि (मस्तक करी नमस्कार करता हूं) इति।

इरियावहियाए का पाठ ।

इच्छाकारेण (तुम्हारी इच्छापूर्वक), संदिसह (आज्ञा करतो) भगवन इरियावहियं (चालते मार्ग में जीव ने मारिया होय), पडिक्कमामि (निवर्तु छूं) पछे गुरु कहे–पडिक्कमह (पापटालो–पछे शिष्य कहे) इच्छं (प्रमाण है), इच्छामि (इच्छा करता हू) पडिक्कमिउ (पाप कर्म से निवृत्त होने के लिये) इरिया (मार्ग में) वहियाए (जाता) विराहणाए (दुःख दिया होय) गमणागमणे (जाता आता) पाणक्कमणे (प्राणी ने पैर से चाप्या होय) बीयक्कमणे (बीज ने चाप्या होय) हरियक्कमणे (वनस्पति वगैरे नु चापी होय) उसा (ओस) उत्तिंग (कीडी नगरा) पणग (फूलण) दग (पानी) मट्टी (सचित्र मट्टी) मक्कड़ा (मकड़ी) संताणा (जाला) संकमणे (दाबा हो) जे मे (जो मेरे) जीवा (जीवों का) विराहिया (नाश हुआ हो) एगिंदिया (एकेन्द्रिय जीव) बेइंदिया (बेइन्द्रिय जीव) तेइंदिया (तीन इन्द्रिय जीव) चउरिंदिया (चार इन्द्रिय जीव) पंचिंदिया (पांच इन्द्रिय जीव) अभिहया (सामने आते मारा) वत्तिया (धूड़ आच्छादन हो गई हो) लेसिया (जमीन पर मसला हो) संघाइया (सामल किया होय) संघट्टिया (सामल हुवे हो) परियाविया (परिताप उपजाया होय) किलामिया (खेद पहुंचाया हो) उद्दविया (त्रास पहुंचाया हो) ठाणा उठाण (एक स्थान से दूसरे स्थान पर) संकामिया (संक्रमण किया हो) जीवियाओ (जीवसे) ववरोविया (मुक्त किया हो)तस्स

तस्स उत्तरी का पाठ।

तस्स उत्तरी करणेण (उसका फिर शुद्धि करने के लिए) पायच्छित करणेण (पापों को दूर करने के लिए) विसोही-करणेण (पुनः आत्मा को विशुद्ध करने के लिए) विसल्ली करणेण (शल्यों को दूर करने के लिए) पावाणं कम्माणं (पाप कर्मों के) निग्घायणट्ठाए (नाश करने के लिए) ठामि (एक स्थान पर रहकर) काउस्सग्ग (कायोत्सर्ग करता हूं) अन्नत्थ (इतना और) उससिएणं (ऊंचे श्वास आने पर) निस्सिएणं (नीचे श्वास होने पर) खासिएणं (खासी के होने पर) छीयणं (छींक आने पर) जभाइएणं (जमाई आने पर) उड्डुएणं (डकार आने पर) वायनिसग्गेणं (अधो वायु के निकलने से) भमलिए (चक्कर आने पर) पित्त मुच्छाए (मुच्छा आने पर) सुहुमेहिं (सूक्ष्म) खेल अंगसंचालेहिं (अंग के संचालन होने पर) सुहुमेहिं खेल संचालेहिं (खखार के आने पर) सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं (आंख टमकारने पर) एवमाइएहिं (इत्यादि) आगारेहिं (दूसरे कई आगारों से) अभग्गो (भंग न होगा) अविराहिओ (विराधित न होगा) हुज्ज (होवें) मे (मेरा) काउस्सग्गो (कायोत्सर्ग) जाव (जबतक) अरिहंताणं भगवंताणं (भगवंत को) नमोक्कारेणं (नमस्कार करके) नपारेमि (मैं न पालु) ताव (तबतक) काय (काया को) ठाणेणं (एक स्थान में) मोणेणं (मौन में) झाणेणं (ध्यान में) अप्पाणं (अपनी काया को) वोसिरामि (छोड़ता हूं) इति

लोगस्स का पाठ।

लोगस्स (लोग में) उज्जोयगरे (उद्योतकरनेवाले) धम्मतित्थयरे (धर्म तीर्थके करनेवाले) जिणे (राग द्वेष को जीतनेवाले) अरिहंते (श्री अरिहंत को) कित्तइस्स (कीर्त्ति करता हु) चउवीसंपि (चौवीस तीर्थंकर) केवली (केवल-ज्ञान के धारक) उसभ (श्री ऋषभदेवजी को) मजियंच (और अजितनाथजी को) वंदे (वंदना करता हु) संभव (संभवनाथजी को) मभिणंदणं (अभिनन्दनजी को) च (और) सुमइंच (श्री सुमतिनाथजी को) पउमप्पहं (पद्म-प्रभुजी को) सुपासं जिणंच (जिनवर और) चंदप्पहं (चन्द्र प्रभुजी को) वंदे (वंदना करता हु) सुविहिं च (सुविधिनाथ जीको और) पुप्फदंत (और पुष्पदंतजीको) सीयल (शीत-लनाथजी को) सिज्जंस (श्रेयांसनाथजी को) वासुपुज्जंच (वासपूज्यजी को और) विमल (विमलनाथजी को) मणंत च (अनन्तनाथजी को और) जिणं (रागद्वेषके जीतनेवाले) धम्म (धर्मनाथजी को) संति च (शांतिनाथजी को और) वंदामि (वंदना करता हू) कुंथु (कुंथुनाथजीको) अरंच (अरनाथजी को) मल्लिं (मल्लिनाथजी को) वंदे मुणिसुव्वयं (मुनिसुव्रतजी को) नमिजिणंच (नेमनाथजी रागद्वेष को जीतने वाले को और) वंदामि रिट्ठनेमिं (अरिष्टनेमी को) पासं पार्श्वनाथजी को) तह (तथा) वद्धमाणं च (महावीर को) एवं (इस प्रकार से) मए (मैंने) अभित्थुआ (स्तुति की है) विहुय (जिन्होंने दूर करी है) रयमला (कर्मोकी रज तथा

मल) पहीण (क्षय कियाहै) जरमरणा (जरा और मरणको) चउवीसपी (एहता चौवीसादि) जिणवरा (जिनवर) तित्थयरा (सब तीर्थंकर देव) मे (मेरेपर) पसीयतु (प्रसन्न हो) कित्तिय (कीर्ति के योग्य) वंदिय (वंदनायोग्य) महिया (पूज्य है) जे (जो) ए (यह) लोगस्स (लोग में) उत्तमा (उत्तम) सिद्धा (सिद्धहै) आरुग्ग (रोगरहित) बोहीलाभं (सम्यक्त्व का लाभ) समाहि (समाधि) वर (जो श्रेष्ठ है) मुत्तम (उत्तम) दिंतु (दो) चंदेसु (चांद से) निम्मलयरा (अधिक निर्मल है) आइच्चेसु (सूर्य से) अहिय (अधिक) पयासयरा (प्रकाश करनेवाले) सागरवर (सागर में श्रेष्ट) गंभीरा (गंभीर है) सिद्धा (सिद्ध) सिद्धिं (मुक्ति) मम (मुझको) दिसतु (दो) ॥ इति ॥

सामायिक लेने का पाठ।

करेमि (मैं करता हू) भंते (हे पूज्य !) सामाइयं (सामायिक)सावज्जं (सावद्य रूप) जोग (योग का) पच्चखामि (प्रत्याख्यान करता हू) जाव (जबतक) नियम (नियम है) पज्जुवासामि (सेवन करता हू) दुविह (दो करण से) तिविहेण (तीन योग से) न करेमि (मैं करू नहीं) नकारवेमि (मैं कराऊ नहीं)मणसा (मनसे)वयसा (वचन से) कायसा (काया से) तस्स (यह सावद्य रूप पाप का) भंते (हेपूज्य) पडिक्कमामि (मैं प्रायश्चित्त करता हू) निंदामि (आत्म-निंदा करता हू) गरिहामि (गुरु की साक्षी से करता हू) अप्पाणं (अपनी आत्मा को) वोसिरामि (पास से अलग करता हू)इति

नमोत्थुणं का पाठ।

नमोत्थुणं (नमस्कार हो) अरिहंताणं (श्री अरिहंतों को) भगवंताणं (भगवंतों को) आइगराणं (धर्म की आदि करने वालों को) तित्थयराणं (तीर्थ के करने वाले) सयमबुद्धाणं (स्वयमेव बोध हुआ है) पुरिसुत्तमाणं (पुरुषों में उत्तम) पुरिससीहाणं (सिंह समान) पुरिसवरपुंडरीयाणं (पुरुषों में पुंडरीक कमल समान) पुरिसवर (पुरुषों में श्रेष्ठ) गंधहत्थीणं (गंध हस्ती समान) लोगुत्तमाणं (लोग में उत्तम) लोगनाहाणं (लोग के नाथ) लोगहियाणं (लोग के हितैषी) लोगपईवाणं (लोग में दीपक समान) लोगपज्जोयगराणं (लोग में परम उद्योत करने वाले) अभयदयाणं (अभय दान करने वाले) चक्खुदयाणं (ज्ञानरूपी नेत्रों के देने वाले) मग्गदयाणं (मोक्ष के बताने वाले) सरणदयाणं (सरण को देने वाले) जीवदयाणं (संयम रूपी जीवन के दाता) बोहिदयाणं (बोध बीज को देने वाले) धम्मदयाणं (धर्म के देने वाले) धम्मदेसियाणं (धर्म का उपदेश करने वाले) धम्मनायगाणं (धर्म के नायक-नेता) धम्मसारहीणं (धर्म रूपी रथ के सारथी) धम्मवर (धर्म में श्रेष्ठ) चाउरंत (चारगति के अन्त करने वाले) चक्कवट्टीणं (चक्रवर्ती समान) दीवोत्ताणं (संसार रूपी समुद्र में द्वीप समान) सरणगइपइट्ठाणं (शरणागतों की वत्सलता करने वाले) अप्पडिहय (किसी से नाश नहीं होय) वरनाण (प्रधान ज्ञान) दंसणधराणं (दर्शन के धरने वाले) वियट्टछउमाणं (चलीगई है छद्मस्थावस्था जिनकी) जिणाणं (जिन्हों ने राग द्वेष को जीता है) जावयाणं (दूसरों

को राग द्वेष के जीतने का उपदेश करते हैं) तिन्नाण (आप तिरे हैं) तारयाण (औरों को तारने वाले) बुद्धाण बोहयाण (आप तत्व जाना दूसरों को बोध देनेवाले) मुत्ताण मोयगाण (आप कर्मों से छूटे और दूसरों को छुडाने वाले) सव्व नुण (सर्वज्ञ है) सव्वदारसिण (सर्वदर्शी है) सिव (कल्याण रूप) मयल (अचल) मरुय (रोगरहित) मणत (अनत ज्ञानादि करी) मक्खय (क्षयरहित) मव्वाबाह (दुःखादि रहित) मपुणरावित्ति (जिसका फिर जन्म नहीं है ऐसी जो सिद्ध गति है) सिद्धगई (मोक्ष है) नामधेय (नाम भी यही है) ठाण (स्थानक को) सपात्ताण (जो मोक्ष को प्राप्त हुए हैं) नमोजिणाण (नमस्कार को जिनेश्वर को) जियभयाण (सातभय जीत लिये हैं) ॥ इति ॥

॥ सामायिक पारने का पाठ ॥

नवमा सामायिक व्रत के रे विषे जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउ । मन, वचन, काया रा जो पाडु वे ध्यान प्रवर्ताया होय, सामायिक में सभालना नहीं कीधी होय, अण पुगी पाडी होय, तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ दस मनरा दस वचन रा, बारे कायरा, बत्तीस दोषा मायलो कोई दोष लागा होय तो तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ सामायिक में स्त्रीकथा, भक्तकथा, देश कथा, राजकथा, ए चार कथा मायली कोइ कथा कीधी होय तो तस्स मिच्छामि दुक्कड ।

॥ सामायिक पाड्या पछे ऐसा पाठ करना ॥

सामायिक समकाएण, फासिय, पालिय सोहिय, तीरिय,

किचियं, आराइयं, आणाए, अणु पालिय, न भवई तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥

॥ अथ सामायिक लेने की विधि ॥

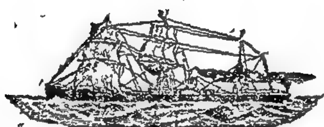
सामायिक कर्त्ता को चाहिए कि पहले भूमि पूजे । फिर आसन बिछा, मुखवस्त्रिका मुख पर बांध प्रथम सचित्त को दूर कर शुद्ध कपड़े धारण कर, दोनों हाथ जोड़, श्री गुरुदेव की आज्ञा मांग "इरियावही" की पाटी "जीवियाओं ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कड़" पूर्ण पाठ बोले । फिर "तस्सुत्तरी" की पाटी कहने का उस्सग्ग करना, काउस्सग्ग में " इरियावहियाए " का सम्पूर्ण पाठ मन ही मनमें कहना, फिर "नमो अरिहंताणं" मनमें कहकर काउस्सग्ग पाडना, फिर " लोगस्स " की पाटी कहना । फिर " करेमिभंते " की पाटी " जावनियम " तक कहीने आगल मुहूर्त्त घालना हुवे जितना घालना, फिर पज्जुवासामि से " अप्पाणं वोसिरामि " तक पाठ करना । पीछे डावा घुटने को ऊंचा कर, दोनों हाथ जोड "नमोत्थुणं" का पाठ दो वार उच्चारण करे । पीछे आसन पर बैठकर " नमोकार, तथा बोलचाल " गुणना पढना ॥ इति ॥

सामायिक पारने की विधि ।

सामायिक पारते समय " इरियावही " की पाटी और " तस्सउत्तरी " की पाटी कह काउस्सग्ग करना । काउसग्ग में "लोगस्स" की पाटी मनमें कहना "नमो अरिहंताणं " कह कर काउसग्ग पारना । फिर " लोगस्स " प्रगट कहना । दोय

नमुत्थुणं पूर्ववत् कहना। फिर " नवमा सामायिक की पाटी और " न भवइ तस्स मिच्छामि दुक्कड़ " तक कहना। अंतमें तीन नमोकार कह कर उठना ॥ इति ॥

इति सामायिक सूत्र समाप्तम्।



प्रतिक्रमण सूत्रम् ।

इच्छामिणं भंते का पाठ ।

इच्छामिणं (मैं इच्छा करता हू) भंते (हे भगवन्) तुब्भेहिं (तुमारी) अभणुनाय समाणे (आज्ञा मागने) देवसी (दिवस संबंधी) पडिकमण (पाप का निवारण करने के लिए) ठाएमि (एक स्थान पर बैठता हू) दिवसि, (ग्यान,) दसण (दर्शन) चरित्ताचरित (चारित्र) तप, अतिचार चिंतवणार्थं (चिंतवना करने के लिए) करेमि काउस्सग्ग (काया की स्थिरता) ॥इति॥

इच्छामि ठामि की पाठी ।

इच्छामि ठामि काउसग्ग जो मे देवसियो (दिवस संबंधी) अइयारो (अतिचार) कओ (किया होय) काइओ (काया से) वाइओ (वचन से) माणसिओ (मन से) उस्सत्तो (सूत्र विरुद्ध परूपणा की होय) उम्मग्गो (जिन मार्ग छोड़ ने दुजो मार्ग पकड्यो होय) अकप्पो (अयोग्य वस्तु भोगी होय) अकरणिज्जो (अयोग्य कार्य कियो होय) दुज्झाओ (आर्त रौद्र ध्यान ध्यायो हो) दुव्विचिंतिओ (अशुभ कार्य मन में याद किया हो) अणायारो (नव अनाचार आचरवा जोग नहीं) अणिच्छियव्वो (इच्छा करना योग्य नहीं) असावग पावग्गो (श्रावक ने उचित नहीं) नाणे (ज्ञान ने विषे) तह (तिमहिज) दसणे (समकित ने विषे) चारित्ता चरित्ते सूए

(सूत्र सिद्धान्त के विषे) सामाइए (समता रूप सामायक ने विषे) तिन्ह गुत्तीण (तीन गुप्ति न पाल्या होय) चउन्ह कसायण (चार कषाय) पंचन्ह अणुव्वयाण (पांच प्रकार का विरमण) तिन्ह गुणव्वयाण (तीन प्रकार का गुणव्रत) चउन्ह सिक्खावयाण (चार प्रकार की शिक्षा) बारस विहस्स (बारे प्रकार का व्रत) सावगधम्मस्स (श्रावक सबंधी) जखंडिय (देश के लिये भंग किया होय) जविराहिय (सब के लिए भंग किया होय) तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

॥ आगमे तिविहे का पाठ ॥

आगमे (सूत्र सिद्धांत) तिविहे (तीन प्रकार का) पनते (कह्या) तजहा (ते कहे है) सुत्तागमे (सूत्र आगम) अत्थागमे (सूत्र ना अर्थ) तदुभयागमे (सूत्र तथा तेहनो अर्थ) एहवा श्री ज्ञान के विषे जे कोई अतिचार लागो होय ते आलोउ, जवाइद्ध (सूत्र आगा पाछा भण्या होय) वच्चामेलिय (उपयोग रहित भण्या होय) हीणक्खर (ओछो अक्षर भण्यो होय) अच्चक्खर (अधिक अक्षर भण्यो होय) पयहीण (पद ओछो भण्यो होय) विणयहीणं (विनय रहित भण्यो होय) जोगहीण (मन वचन काया से जोग ठाम राख्या) घोसहीण (शुद्ध उच्चार रहित भण्या होय) सुट्ठुदिन्न (शुद्ध ज्ञान अविनीत ने दियो होय) दुट्ठु पडिच्छिय (अविनीत पने ज्ञान लियो होय) अकाले कओ सज्झाओ काले न कओ सज्झाओ, असज्झाए सज्झाइय सज्झाये न सज्झाय भणता

गुणतां चिंतवतां ने विचारतां ज्ञान अने ज्ञानवंत की आशातना कीनी होय तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति ॥

॥ दंसण श्री समकित का पाठ ॥

अरिहंतो महदेवो, जावज्जीव सुसाहुणो गुरुणो, जिण पएणत्त तत्त ए सम्मत्त मए गहियं एवा श्री समकित के विषे जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउ, जिन वचन में शका आणी होयं, पर दर्शनरी वांछा कीधी होय, फल प्रति संदेह आएयो हो, पर पाखंडीरी प्रशसा कीधी होय, पर पाखंडी से सस्तव परिचय कीधो होय, तो मारा समकित रूप रत्नरे विषे मिथ्यात्व रूप रज, मेल, खेह लागी होय तस्समिच्छामि दुक्कडं ॥ इति ॥

बारे व्रत और उनके अतिचार ।

पहिलो अणुव्रत-(साधुना पांच महाव्रतनी अपेक्षा छोटो व्रत) थूलाओ (मोठा) पाणाइवायाओ (जीव मात्र नी हिंसा) वेरमणं (छोड़ता हूँ), त्रसजीव, बेइंदिय, तेइंदिय, चउरिंदिय, पचेंदिय, बिन अपराधे जाणी प्रीछी आकुटी सकल्पी हणवारी, बुद्धि करी ने हण हणावण का पचक्खाण जावज्जीवा दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मनसा वयसा कायसा । (एवा पहला थूल प्राणातिपात (जीवनी हिंसा) विरमण व्रत के विषे जे कोई अतिचार लागो होवे तो आलोउं, रीस वसे गाढ़ा बंधण बांध्या होय, गाढ़ा भाव घाल्या होय, चामना छेद कीधा होय, अति भार घाल्या होय, भात पाणीना विच्छेद कीधा होय तस्स मिच्छामि दुक्कड)॥ १ ॥

दूजो अणुव्रत—थुलाओ मोसावायाओ (झुठ बोलना) विरमण कन्नालिय (कन्या तथा वर सम्बन्धी झुठ) गोवालिय (गाय, भैंस आदि सम्बन्धी झुठ) भोमालिय (पृथ्वी के काम में झुठ) थापणमोसो (कोईनी स्थापण उलववी) मूक ले कूड़ी साख, इत्यादिक मोट का झूठ बोलण का पचक्खाण जावज्जीवाए, दुविह तिविहेण न करेमि न कारवेमि मनसा वयसा कायसा । (एवा इजा थूल मृषावाद विरमण व्रत के विषे जे कोई अतिचार लागो होय तो, आलोउ, सहसात्कारे किणी प्रति कूड़ो आल दीधो होय, रह छानी वात प्रगट कीधी होय, अपनी स्त्री का मर्म प्रकाश्या होय, मृषा उपदेश दीधा होय, कूड़ा लेख लिख्या होय तस्स मिच्छामि दुक्कड़) ॥२॥

तीजो अणुव्रत–थूलाओ अदिन्नादाणाओ (चोरी करना) विरमणं, खातर खिणी, गाठ छोड़ी, ताला पर कूची, वाट पाड़ी पड़ी वस्तु मोट की धणीयां सेती जाणी ने लेवण का पचक्खाण जावज्जीवाए दुविह तिविहेण न करेमि न कारवेमी, मनसा वयसा कायसा । (एवा तीजा थूल अदत्तादान विरमण व्रत के विषे जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउ, चोराई वस्तु लीधी होय, चोर ने साझ दीधो होय, राज्य विरुद्ध कारज कीधो होय, कूड़ा तोल कूड़ा मापा कीधा होय वस्तु में भेल समले सखरी दिखाय नरवरी आपी होय तस्स मिच्छामि दुक्कड़) ॥३॥

चोथो अणुव्रत—थूलाओ मेहुणाओ (मैथुन) विरमण, पोतारी स्त्री उपरांत मैथुन सेवण का पचक्खाण, जावज्जीवाए देवता सम्बन्धी दुविह तिविहेण न करेमि न कारवेमि मनसा

वयसा कायसा, मिनख तिर्जंच सम्बन्धी इकविह इक विहेण न करेमि कायसा (एवा चौथा थूल स्वदारा) (अपनी स्त्री) संतोष विरमण व्रत के विषे जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं इत्तर थोडा काल राखीह गमन कीधा होय, अपगृही घ गमन-कीधाहोय, अनग क्रीडा कीधी होय, परायाव्याव नातरा जोडिया होय कामभोग तीव्र अभिलाषा सेवियाहोय तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ ४ ॥

पांचवो अणुव्रत-थूलाओ परिग्गओ (परिग्रह दौलत) विरमणं, खेत घर की, रूपा सोना को, धनधान्य को, दुपद चौपद को, घर विखरा को यथा परिमाण कीधा होय ते उपरांत आपको करी परिग्रह राखण का पचक्खाण जावज्जीवाए एकविह तिविहेण न करेमि मनसा वयसा कायसा (एवा पाचवां थूल परिग्रह विरमण व्रत के विषे जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं, खेत घर को रूपासोना, को धन धान्य को, डुपद चौपद को घर विखरा को यथा परिमाण कीधा है ते अतिक्रम्यो होय, तस्स मिच्छामि दुकड) ॥ ५ ॥

छट्ठो दिशिविरमण व्रत-ऊंची नीची तिरछी दिशा को यथा परिमाण कीधो छै ते उपरात स्वइच्छायें जाई ने पांच आश्रव द्वार सेवण का पचक्खाण, जावज्जीवाए एकविह तिविहेणं न करेमि मनसा वयसा कायसा (एवा छट्ठा दिशिविरमण व्रत के विषे जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं, ऊंची नीची तिरछी दिश को यथा परिमाण कीधो छै ते अतिक्रम्यो होय, एकदिश घटाई होय, एक दिश वधाई होय, सदेह पड़िया पंथ आगे चाल्यो होय तस्स मिच्छामि दुकड) ॥ ६ ॥

सातमो उपभोग परिभोग विरमण व्रत–उल्लणिया-विहं (अग पूछना आदि विधि) दतणविहं (दातणविधि) फल विह (फलविधि) अभंगणविह (तेल मालिस की विधि) उवट्टणविह (उबटन आदि की विधि) मज्जणविह (स्नान की विधि) वत्थविहं (वस्त्रविधि) विलेवण विह (विलेपन विधि (पुष्फ-विह पुष्प विधि) आभरण विह (आभूषण विधि) धूपविह (धूप की विधि) पेजविह (दुध आदि पीवा की विधि) भक्खणविह (भक्षण की विधि) ओदनविह (चावल की विधि) सूपविह (दाल की विधि) विगयविह (विगय की विधि) सागविह (साग की विधि) माछुरविह (मधुर पदार्थ की विधि) जीमण विह (जीमवानी विधि) पाणीविह (पानी की विधि) मुख वासविह (सोपारी पान आदि की विधि) वाहनविह (सवारी की विधि) सयणविह (पलग आदि सोने की विधि) पन्निविह (पगरखी की विधि) सचित विह (सचित की विधि) द्रव्यविह (द्रव्य की विधि) इत्यादिक छाडेंस बोलां की मरजाद कीधी छै ते उपरान्त उपभोग परिभोग भोगण का पचक्खाण जावज्जीवाए एगविह तिविहेण न करेमि मनसा वयसा कायसा । (एवा सातवां उपभाग विरमण व्रत के विषे जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं, पचक्खाण उपरान्त सचित्त को आहार कीधो होय, सचित्त प्रतिवद्ध को आहार कीधो होय, अपक्क को आहार कीधो होय, दुपक्क को आहार कीधो होय, तुच्छ औषधि भक्खण कीधा होय, थोड़ो खाय घणो नाखियो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं) । इति ।

वयसा कायसा, मिनख तिर्जंच सम्बन्धी इकविह इक विहेण करेमि कायसा (एवा चौथा थूल स्वदारा) (अपनी स्त्री सतोष विरमण व्रत के विषे जे कोई अतिचार लागो होय त आलोउ इत्तर थोडा काल राखीह गमन कीधा होय, अपगृहं म् गमन-कीधाहोय, अनग क्रीडा कीधी होय, परायाण्या नातरा जोडिया होय कामभोग तीव्र अभिलाषा सेवियाहोय तस मिच्छामि दुक्कड ॥ ४ ॥

पांचवो अणुव्रत—थूलाओ परिग्गओ (परिग्रह दौलत विरमण, खेत घर की, रूपा सोना को, धनधान्य को, दुपद चौपद को, घर विखरा को यथा परिमाण कीधा होय ते उपरांत आपको करी परिग्रह राखण का पचक्खाण जावज्जीवाए एकविह तिविहेण न करेमि मनसा वयसा कायसा (एवा पाचवां थूल परिग्रह विरमण व्रत के विषे जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं, खेत घर को रूपासोना, को धन धान्य को, दुपद चौपद को घर विखरा को यथा परिमाण कीधा है ते अतिक्रम्यो होय, तस्स मिच्छामि दुक्कड) ॥ ५ ॥

छट्टो दिशिविरमण व्रत–ऊची नीची तिरछी दिशा को यथा परिमाण कीधो छै ते उपरात स्वइच्छायें जाई ने पाच आश्रव द्वार सेवण का पचक्खाण, जावज्जीवाए एकविह तिविहेण न करेमि मनसा वयसा कायसा (एवा छट्टा दिशिविरमण व्रत के विषै जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउ, ऊंची नीची तिरछी दिशा को यथा परिमाण कीरो छै ते अतिक्रम्यो होय, एकदिशा घटाई होय, एक दिशा वधाई होय, सदेह पड़िया पथ आगे चाल्यो होय तस्स मिच्छामि दुक्कड़) ॥ ६ ॥

सातमो उपभोग परिभोग विरमण व्रत—उल्लणिया-विह (अंग पूछना आदि विधि) दतणविह (दातण विधि) फल विह (फलविधि) अभ्भंगणविहं (तेल मालिस की विधि) उवट्टणविह (उबटन आदि की विधि) मज्जणविह (स्नान की विधि) वत्थविहं (वस्त्रविधि) विलेवण विह (विलेपन विधि (पुष्फ-विह पुष्प विधि) आभरण विह (आभूषण विधि) धूपविह (धूप की विधि) पेज्जविह (दुध आदि पीवा की विधि) भक्खणविह (भक्षण की विधि) ओदनविह (चावल की विधि) सूपविह (दाल की विधि) विगयविह (विगय की विधि) सागविह (साग की विधि) माहुरविह (मधुर पदार्थ की विधि) जीमण विह (जीमवानी विधि) पाणीविह (पानी की विधि) मुख वासविह (सोपारी पान आदि की विधि) वाहनविह (सवारी की विधि) सयणविह (पलग आदि सोने की विधि) पन्निविह (पगरखी की विधि) सचित विह (सचित की विधि) द्रव्यविह (द्रव्य की विधि) इत्यादिक छाईस बोलां की मरजाद कीधी छै ते उपरान्त उपभोग परिभोग भोगवण का पचक्खाण जावज्जीवाए एगविह तिविहेणं न करेमि मनसा वयसा कायसा । (एवा सातवां उपभोग विरमण व्रत के विषे जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउ, पचक्खाण उपरान्त सचित्त को आहार कीधो होय, सचित्त प्रतिवद्ध को आहार कीधो होय, अपक्क को आहार कीधो होय, दुपक्क को आहार कीधो होय, तुच्छ औषधि भक्खण कीधा होय, थोड़ो खाय घणो नाखियो होय तस्स मिच्छामि दुक्कड) । इति ।

ए भोजन थकी कह्याहिवे कर्मथकी पनरे कर्मादान श्रावक ने जांणवा जोग छे पर आदरवा जोग नहीं, तजहा ते कहछै इंगालकम्मे. (आग का व्यापार लोहकारादि का कर्म) वण कम्मे (वन में घास दरखतादि काटवा का कर्म) साडी कम्मे (गाडी आदि कराय ने बेचणा) भाडीकम्मे (ऊंट, घोडा, आदि भाडा को व्यापार कीधो होय) फोडीकम्मे (खान खु· दाना, कर्षण कराना इत्यादि पृथ्वीका पेट फोडाना कुआआदि करानां, कर्म कीधा होय) दंतवाणिज्जे (दांतको व्यापार) लक्खवाणिज्जे (लाखनो व्योपार) रस वाणिज्जे (घी, तैल रसादि का व्यापार) केसवाणिज्जे (बाल चमडादि का व्यो पार) विस वाणिज्जे (जीव घातक वस्तुनो व्यापार) जतपिल्लण कम्मे (कल घाणी आदिनो व्योपार) निल्लंच्छण कम्मे (बलदा दिक ने अंकाववा, डाम दिराना) दवग्गिदावणया (वन मेमुख में लाय लगाना) सर दह तलायपरिसोसणया (तालाब आदि ने सोखावो) असई जण पोसणया (कुत्ताआदि हिंसक जीवने पोष्या होय) तस्समिच्छामि दुक्कड ॥ इति ॥ ७ ॥

आठमो अनर्थदंड विरमण व्रत—चउव्विहे (चार प्रकार) पंनणत्ते (प्ररूप्यो) तंजहा, अवज्झाण चरिय (खोटा ध्यान· धरना) पमाय चरियं (प्रमाद करना) हिंसपयाणं (प्राण- हिंन्सा) पावकम्मो वएस (·पापकर्म का उपदेश) एवा अनर्थ दण्ड सेवणरा पचक्खाण, जावज्जीवाए, दुविह तिविहेणं न करेमी न कारवेमि मनसा वयसा कायसा । (एवा आठवां अनर्थदंड विरमणव्रत के विषे जे कोई अतिचार लागो होय ते

आलोउ, कदर्प की कथा कीधी होय, भड कुचेष्टा कीधी होय, मुखर वचन बोल्या होय, अधिकरण जोडी मूक्या होय, उपभोग परिभोग अधिका वधारया होय तस्समिच्छामि दुक्कडं ॥ ॥ इति ॥ ८ ॥

नवमा सामायिक व्रत—सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव-नियम पज्जुवासामी दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मनसा वयसा कायसा एवी मारी श्रद्धा परूपणा तो छै फरसणा करु तेवारे सिद्ध । (एवा नवमा सामायिक व्रतके विषे जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउ, मन वचन कायारा जोग पाडवे ध्यान प्रवर्ताया होय, सामायिक में सम्भालना नहीं कीधी होय, अणपूगी पाडी होय तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ ९ ॥

दसमा देसावगासिक व्रत—दिन प्रति प्रभात थकी प्रारमी ने पूर्वादिक छः दिशा की जेटली भूमिका मोकली राखी छै ते उपरान्त स्वइच्छायें कायायें जई ने पांच आश्रव द्वार सेवण का पचक्खाण । जाव अहोरत्त दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मनसा वयसा कायसा, ते माहिं द्रव्यादिक नेमकी मरजादा कीधी छै ते उपरान्त भोगवणरा पचक्खाण । जाव दिवस पज्जुवासामि, एगविहं तिविहेणं न करेमि मनसा वयसा कायसा एवी मारी श्रद्धा परूपणा तो छै फरसणा करू तेवारे सिद्ध । [एवा दसमा देसावगासि व्रत के विषे जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउ. नेमी भूमिका थी वस्तु बारथी अणाई होय मोकलाई होय, शब्दकरी रूपकरी पुद्गल नांखी आपो जणायो होय तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ १० ॥

इग्यारमा पोषध व्रत—असण (आहार) पाणं (पानी) खाइमं (मेवादिक) साइम (पान सुपारी आदि) का पचक्खाण, अबम (मैथून) सेवण का पचक्खाण, अमुक मणि सोवन का पचक्खाण, माला वन (गुलाल रंग आदि) विलेपण का पचक्खाण, सत्थ (हथियार) मुसलादिक सावज्ज (सावद्य) जोग का पचक्खाण, जाव अहोरत्तं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मनसा वयसा कायसा, एवी मारी श्रद्धा प्ररूपणा तो छै फरसणा करू तेवारे सिद्ध ॥

एवा इग्यारमा पोषध व्रत के विषै जे कोई अतिचार लागो होयतो आलोउ, पोसा में सज्जा सथारो न जोयो होय, मार्ग तरे जोयो होय न पूज्यो होय, माठी तरे पूंज्यो होय, उचार, पासवण भूमिका न जोई होय, माठीतरे जोई होय, न पूजी होय, माठीतरे पूजी होय, पोसा में निद्रा, विकथा प्रमाद कीधो होय तस्स मिच्छामि दुक्कड़। जावता अवसही आवसही नहीं किधु होय, आवता निसिही निसिही नहीं कीधु होय, इन्द्र महाराजरी आज्ञा नहीं लीधी होय, थोड़ी दूर पूज्या होय, घणी दूर परठी होय, परठन तीन चार वीसरे २ नहीं कीधु होय तस्स मिच्छामि दुक्कड़ ॥ ११ ॥

बारमा अतिथी संविभाग व्रत—साधु निग्रंथ ने फासुएसणीक शुद्ध, असण पाण, खाइम, साइम, वत्थ, पडिग्गह (पात्र) कंबल, पायपुन्छणेण (पैर पूंछने का) पीढ़ (पाट) फलग (बाजोट आदि) सिज्जा (पाट, स्थानक,) सथारो (तृणादिक) औषध, भेषज (चुर्णादि) प्रतिलाभतो थको विचरू एवी मारी श्रद्धा प्ररूपणा तो छै फरसणा करू तेवारे सिद्ध।

[एवा बारमा अतिथि संविभाग व्रतके विषै जे कोई अतिचार लागो होय ता आलोउ, सूजता वस्तु सचित्त ऊपर मूकी होय, सचित्त करी ढांकी होय पोतेरी वस्तु पारकी कही होय, अहङ्कार माथे दान दीधु होय, थोडो दे घणो पोमायो होय, भोजन वेला टालीने निमन्त्रण कीधी होय तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥१२॥

संलेखणा की पाटी।

एवा संलेपणा के विषै जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउ, इहलोगा समप्पउगे (इस लोग में इच्छा करके मैं राजा होउ) परलोगा ममप्प उग (परलोग में सुख की इच्छा करे कि मैं देवता होवु) जीविया समप्प उगे (जीवित की इच्छा) मरणा समप्प उगे (मरण की इच्छा करे कि मैं दुःख से छुटु) काम भोगा ममप्प उगे (कामभोगनी इच्छा करे) मा मज्ज हुज्ज मरण ते (ये उपरोक्त विचार मरणान्त तक नहीं होवे) श्रद्धा प्ररूपणा में फरक आयो तो तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥

तस्स धम्मस्स की पाटी।

तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स (केवलि भाषित एवा श्रावक धर्म ने) अब्भुट्ठिओमि (सब रीत पालन करने के लिये उठा हू) आराहणाए (आराधना के लिए) विर ओमि विरा हणाए (विराधना करवा थकी मैं निवर्त्यो छू) तिविहेण

(तीन विधि करी) पडिक्क तो (प्रतिक्रांत थका इतना अतिचार पाप थकी निवर्त्यो) वंदामि (मैं नमस्कार करता हू) जिणे चउव्वीस (चोवीस जिनराज को) ।। इति ॥

तस्स सव्वस्स की पाटी ।

तस्स सव्वस्स (वे सब) देवसियस्स (दिन सम्बधी) अइयारस्स (अतिचार) दुब्भासिय (खराब भाषा) दुर्चिंतिय (खोटी चिन्तवना) आलोयते (आलोउ) पडिक्कमामि ।

चत्तारी मंगल का पाठ ।

चत्तारी (चार), मगल), अरिहता मगल, सिद्धा मगल, साहु (साधु) मगलं केवलि पन्नत्तो धम्मो मगलं (केवलि प्ररूप्यो धर्म ते मगल) चत्तारि लोगुत्तमा (चार लोगा में उत्तम) अरिहतो लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, केवलि पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमा चत्तारि सरण पवज्जामि (ग्रहण करता हूँ) अरिहन्ते सरण पवज्जामि, सिद्धसरण पवज्जामि, साहुसरण पवज्जामि, केवलिपन्नत्त धम्म सरण पवज्जामि । अरिहतारो सरणो, सिद्धारो सरणो, साधारो सरणो, केवलि प्ररूपित दयाधमरो सरणो । चारसरणां दुर्गति हरणा, और सरणो नहीं कोय । जे भव्यप्राणी आदरे तो अक्षय अमर पद होय ॥ इति ॥

अठारे पापस्थानक का पाठ ।

अठारे पापस्थानक आलोउ, प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान (बड़ा आल देना) पैशुन्य (चुगली खाना) पर परिवाद (दूसरेका अवगुणबोलना) रति अरती (हर्ष शोक करना) माया मोसो (कपट सहित झुठ बोलना) मिथ्यादर्शन शल्य (खोटी श्रद्धा तथा सल्ल राखना) ए अठारे पापस्थानक सेव्या होय सेवता प्रति भला जाण्यो होय तस्स मिच्छामि दुक्कड़ ॥ इति ॥

॥ खमासण की पाटी ॥

इच्छामि (मैं चाहता हु) खमासणो (हे क्षमा श्रमण) वंदिउ (वांदणे कू) जावणिज्जाए (शक्तिकरयुक्त) निसीहीआए (जीवहिंसा रहित प्रयोजन वाला मेरे शरीर से) अणुजाणह (मुझको हुकम देओ) मे (मुझको) मिउग्गह (प्रमाणयुक्त क्षेत्रमें प्रवेश करने) निसीहि (दूसराकामछोडके) अहो (नीचे झुक के) काय (काया से) कायसफास (आपके पांव काया से) खमणि (स्पर्श करता हू) ज्जोमे (माफ करना) किलामो (हेभगवत आपको खेद उपजाया होय) अप्पकिलताण (थोडी ग्लानि) बहुसुभेण (बहुत समाधि भाव से) मे (हे पूज्य) दिवसो (दिन) वइक्कतो (बीताहै) जत्ताभे (तप नीयम सजम स्वाध्याय रूप यात्रा) जवणिज्जच

(इद्रिय और नो इद्रिय से खेदरहित आपका शरीर) (हे भगवन्) खामेमि (खमाता हू) खमासमणो, देवसि वइक्कम (दिन सम्बन्धी अपराध) आवासिआए (आवश्य क्रिया) पडिक्कमामि (मैं निवर्तता हूं) खमासमणाण (साधुओं की) देवासियाए (दिनमें हुई) आसायणाए (आशातना हुई हो) तेतीसन्नयराए (तेतीस आशातना में से) जं कि चि (जो कुछ) मिच्छाए (मिथ्याभाव रूप आशातना) मण दुक्कडाए (मन सम्बन्धी पाप वय दुक्कडाय (वचन संबन्धी पाप) काय दुक्कडाय (शरीर सम्बन्धी पाप) कोहाए (क्रोधरूप अशातना माणाए (मान आशातना) मायाए (माया आशातना लोहाए (लोभ आशातना) सव्वकालियाए (सब काल सम्बन्धी) सव्वमिच्छोवयाराए (सब मिथ्या उपचार आशातनाकर के) सव्वधम्माइक्कमणाए (सब धर्म करणी उल्लंघने रूप) आसायणाए (आशातना करने से) जो मे (जो मेरे जीव ने) अइयारो (अतिचार) कओ (किया होय) तस्स (उसका) खमासमणो पडिक्कमामि (मै प्रतिक्रमता हूं) निंदामि (आत्म से निंदता हु) गरिहामि (गुरु की साक्षी निन्दता हु (अप्पाणं मेरी पापी आत्मा को) वोसिरामि (मै छुडाता हु) इति ॥

॥ पंच पदों की वंदना

नमो अरिहंताणं कहता पहिले पद जघन्य २० तीर्थंकर जी, उत्कृष्टा १७० तीर्थंकर जी, ३४ अतिशय ३५ वाणी करने

विराजमान, १००८ लक्षण का धरणहार, १८ दोष रहित, १२ गुण करी सहित, अनंता ज्ञान, अनंतो दर्शन अनंतो सुख, अनंता बल, दिव्य धुनि भामण्डल फटिक सिंहासन, अशोक वृक्ष पुष्पवृष्टि, देवदुंदुभि छत्र धरे चामर निज चौसठ इन्द्रारा पूजनीक महाविदेह क्षेत्र में जयवन्ता विचरें, जघन्य २ क्रोड केवली उत्कृष्टा ९ क्रोड केवली, केवलज्ञान, केवल दर्शन करीने विराजमान, सर्वद्रव्यक्षेत्र, कालभावना जाणनहार, ज्या महापुरुषा ने म्हारी वंदना मालूम हुई जो तिक्खुत्तो रे पाठ सु।

॥ सवैया ॥

नमु श्री अरिहंत, कर्मों को कियो अंत,
हुवा सो केवल पथ, करुणा भंडारी है।
अतीशे चौतीस धार, पैतीस वाणी उचार,
समझावे नर नार, पर उपकारी है।
शरीर सुंदर आकार, सूरज सो झलकार,
गुण है अनंत सार, दोष परिहारी है।
कहत है तिलोक रिख, मन, वच, काया करि,
लली लली वारवार, वन्दना हमारी है॥

ऐसे श्री अरिहंत भगवन दीनदयाल महराज को अविनय आशातना कीधी होय, तो (देवसी, या, रायसी) संबधी हाथ जोड़ी, मान मोड़ी, काया सकोची वारवार खमाता हू, मत्थएण वंदामि। नमस्कार करता हु १००८ वार तिक्खुत्तो के पाठ सु मन वचन काया करीने, आप मांगलिक हो, उत्तम हो, हे स्वामि-

नाथ आपको इण भव, परभव, भव भव सदा काल सरणे हुई जो ॥ इति ॥

बीजे पद नमो सिद्धाण कहता सिद्ध भगवान १५ भेदे, १४ प्रकारे सिद्ध सिद्धा ८ गुणा करी विराजमान जठे जन्म नहिं, जरा नहीं, मरण नहीं, रोग नहीं, शोक नहीं, मोह नहीं, माया नहीं कर्म नहीं, काया नहीं, चाकर नहीं, ठाकुर नहीं, निरजन निराकार, जोत में जोत विराजमान, अनतो सुख में भिलरया, ज्या महापुरुषाने मारी वन्दना तिक्खुत्ता के पाठ से हुईजो।

॥ सवैया ॥

सकल कर्म टाल, वश कर लियो काल,
मुक्ति में रह्या माल, आत्मा कु तारी है।
देखत सकल भाव, हुआ है जगत राव,
सदा ही चायिक भाव, भय अविकारी है।
अचन्द अटल रूप, आवे नहीं भव कूप,
अनूप सरूप उप, ऐसे रिद्धधारी है।
कहत है तिलोक रिख, बताओ ए वास प्रभु,
सदा ही उगते सूर वन्दना हमारी है ॥ २ ॥

ऐसे सिद्ध महाराज आपका अविनय आशातना कीधा होय, तो (देवसी रायसी सम्बन्धी) हाथ जोड़ी मान मोड़ी काया संकोची वारम्वार खमाता हू। मत्थएण वंदामि १००८ वार तिक्खुत्तारे पाठ सुं मन, वचन, काया करी ने आपको भव भव सदा काल सरणो हुई जो।

तीजे पद नमो आयरियाण कहना आचार्यजी महाराज, ३६ गुणा करी विराजमान ५ आचार पाले, ५ इन्द्रिया जीते, ५ महाव्रत पाले, ४ कषाय टाले, ६ बाड शुद्ध शीलव्रत पाले ५ सुमति सुमता ३ गुप्ति गुप्ता, अनेक गुणा करी विराजमान, ८ सम्पदा सहित ज्यां महापुरुषोंने मारी वन्दना हुई जो तिक्खुत्तो पाठसु।

सवैया—

गुण है छतीस पुर, धरत धर्म उर,
मारत कर्म कुर, सुमति विचारी है।
शुद्ध सो आचारवन्त, सुन्दर है रूप कंत,
भणिया सभी सिद्धान्त, वाचणा सु प्यारी है।
अधिक मधुर वैण, कोई नहीं लोपें केण,
सकल जीवों का सेण, किचि अपारी है।
कहत है तिलोक रिख, हितकारी देत सिख,
ऐसे आचारज ताकु वन्दना हमारी है॥ ३॥

ऐसे आचार्यजी महाराज · ·· · सरणो हुई जो।

चोथे पद नमो उवज्झायाण कहता सर्व उपाध्यायजी महाराज २५ गुणा करी ने विराजमान, ११ अंग १२ उपांग आप भणे औराने भणावे १४ पूर्वना पाठी, करण सत्तरी, चरण सत्तरी ना धरणहार, थेवर डिगते प्राणी ने धर्म रे विषय स्थिर करणहार, गणां सूत्रना पाठी वो जाणनहार, ज्या महापुरुषो ने मारी वन्दना तिक्खुत्तो के पाठ सु मालूम हुई जो।

सवैया

पढ़त इग्यारे अंग, कर्मा सु करें जग
पाखंडी को मान भग, करण हुशियारी है।
चवदे पूर्वधार, जाणत आगम सार,
भवियन के सुखकार, भ्रमता निवारी है।
पढ़ावे भविकजन, स्थिरकर देत मन,
तपकरी तावे तन, ममता निवारी है।
कहत है तिलोख रिख, ज्ञान भानू परतिख,
ऐसे उपाध्याय ताकु वन्दना हमारी है।

ऐसे उपाध्यायजी महाराज मिथ्यात्व रूप अन्धकारन मेटन हार, समकित रूप ना उद्योत करण हार, धर्म थकि डिगते प्राणी ने स्थिर करणहार, इत्यादिक अनेक गुणा करी विराजमान ऐसे उपाध्यायजी महाराज . . . . मत्थएण वंदामि।

पांच मे पद नमो लोए सव्वसाहूणं कहता सब परकार्य साधन हार पोताना धर्माचार्य (यहा पर अपने अपने गुरु का नाम लेना) जी महाराज जघन्य २ हजार क्रौड साधु साध्वी, उत्कृष्टा ६ हजार क्रोड़ साधु साध्वी अढ़ाई द्वीप, पनरे क्षेत्र में जेवन्ता विचरे २७ गुणा करी ने विराजमान, ५ महाव्रतपाले, ५ इन्द्री जीते ४ कषाय टाले भव सच्चे, करण सच्चे, जोग सच्चे, मनसमाधारणिया, वय समाधारणिया, काय समाधारणिया नाण सपन्ने, दसण सपन्ने, चारित्त सपन्ने क्षमावत, वैराग्यवत, वेदनी समा आहिया सणिया, मरणंत कष्ट सहे,

५२ अनाचार टाले, ४२ दोष टाली ने आहार पानी लेवे ४७ दोष टाली ने भोग वे, २२ परिसाजीते, १७ भेदे शुद्ध सजम पाले, १२ भावना भावे, १२ भेदे तप करे, १० यति धर्म ना धारक, अनेक गुणों करी ने विराजमान, वस्त्रपात्र, आहार स्थानक निर्दोष भोगवे, भगवंत की आज्ञा माहि विचरे ज्यां महापुरुषां ने मारो वदना मालूम हुई जो तिक्खुता के पाठ सु ।

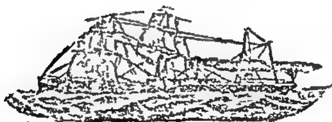
[सवैया]

आदरों सजम भार, करणि करे अपार,
सुमति गुप्तिधार, विकथा निवारी है ।
जेयणा करे छ, काय सावधान बोले वाय,
बुझाइ कषाय लाय, क्रिया भंडारी है ।
ज्ञान भणे आठों जाम, लेवे भगवत नाम,
धर्म को करे काम ममता को मारी है ।
कहत है तिलोख रीख, कर्मो को टाले विख,
ऐसे मुनिराज ताकु, वदना हमारी है ।

(श्रीगुरुदेवने)

जैसे कपड़ा को थान, दरजी बेतत आण,
खडखड करे आण, देतसो सुधारी है ।
काटके वधु सुत्रधार, हेमक कमे सुनार,
माटी के को ज्यों कुमकार, पात्र कर त्यारी है ।
धरती के कीरसाण, लोहे के लुहार जाण,
सीलवाट सीला आण, घाट घडे भारी है ।

केन है तिलोक रीख, सुधारे ज्युं गुरु शीप,
गुरु उपकारी, नित लीजे बलिहारी है ॥१॥
गुरु मित्र, गुरु मात, गुरु सगा, गुरु तात,
गुरु भूप, गुरु भ्रात, गुरु हितकारी है।
गुरु रवि, गुरु चन्द्र, गुरु पति, गुरु इंद्र,
गुरु देव दे आणद, गुरु पद भारी है।
गुरु दिठत ज्ञान ध्यान, गुरु देत दान मान,
गुरु देत मोच थान सदा उपकारी है।
केत है तिलोक रीख, भली भली दीनी शिख,
पल पल गुरुजी को, वंदणा हमारी है ॥२॥



अनंत चोवीसी स्तवन

अनंत चोवीसी जे नमू, सिद्ध अनंता क्रोड़ ।
केवल ज्ञानी गणधरा, वंदू बे कर जोड़ ॥ १ ॥
दो क्रोड़ केवल धरा, विहरमान जिन वीश ।
सहस्र युगल क्रोडी नमू साधु नमू निश दीश ॥ २ ॥
धन साधु धन साध्वी, धन श्री जैन धर्म ।
इण समरया संकट कटे, टूटे आठो कर्म ॥ ३ ॥
अरिहंत सिद्ध सिमरू सदा, आचार्य उवज्झाय ।
साधु सकल के चरण को, वंदू शीश नमाय ॥ ४ ॥
लोभी गुरु तारे नहीं तिरे सो तारणहार ।
जो तू तिरवो चाहिये, निर्लोभी गुरु धार । ५ ॥
सत्य मत छोडो हे नरा, लक्ष्मी चौगुनी होय ।
दुख सुख रेखा कर्म की, टाले टले न कोय ॥ ६ ॥
विघ्न हरण मंगल करण, धन श्री जैन धर्म ।
इण समरया संकट कटे, टूटे आठों कर्म ॥ ७ ॥

आयरिय उवज्झाए का पाठ ।

आयरिय (आचार्य) उवज्झाए (उपाध्याय) सीसे (शिष्य) साहम्मिए (साधर्मिक) कुलगणे (कुलसम्प्रदाय) अ (सबके ऊपर) जे (जो) मे (मारेजीवें) केइ (कोई) कसाया (क्रोधादिक कपाय कीधा होय) सव्वे (सब) तिविहेण

(त्रिविध करी) खामेमि (खमाता हूं) सव्वस्स समणसंघस्स भगवओ (सव श्रमण संघ रूप भगवंत ना जो अपराध किया होय) अंजलिं करिय सीसे (मस्तकपर दो हाथ जोड़ कर) सव्व खमावइत्ता (उन सव अपराध प्रत्ये खमावी ने) खमामि सव्वस्स अहयपि (मैं उन सब अपराधोंको खमाता हू) सव्वस्स जीव रासिस्स (एकेंद्रियादिक सव जीवनी राशि) भावओ (भावथी) धम्म (धर्म) निहिय (निश्चित करयु) नियचित्तो (निज चित्त) सव्वं खमावइत्ता खमामि सव्वस्स अहमपि ॥ इति ॥

श्रावकों से खमत खमावणा करने का पाठ।

अढाई द्वीप पन्नरह क्षेत्रमाहे श्रावकजी * जीवका जाण, अजीव का जाण, पुण्य का जाण, पापका जाण, आश्रवका जाण, सवरका जाण, निर्जरा का जाण, नव का जाण, मोक्ष का जाण, दान का देने वाला, भावनाका भावने वाला, बड़ा श्रावकजी ने * हाथ जोड़, मानमोड, वार वार खमावू छू, छोटा ने समुच्चय वारवार खमावू छु ॥ इति ॥

चोरासी लाख जीवयोनि का पाठ।

सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अपकाय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वायुकाय, दशलाख प्रत्येक वनस्पति काय चौदह लाख साधारण वनस्पतिकाय, दो लाख वेन्द्रिय दो लाख तेइन्द्रिय दो लाख चउरिंद्रिय, चार लाख नारकीय, चारलाख देवता, चार लाख तिर्यच पंचेंद्रिय चौदह लाख मनुष्य की जाति

* श्राविकाओं को "श्रावक" शब्दके स्थान में "श्राविका" कहना चाहिए।

चार गति चौवीस दडक, चौरासी-लाख जीवयोनि में से कोई जीव ने जाणता अजाणता मन वचन काया करी ने हणया होय, हणायो होय हणता प्रत्ये भलो जाण्यो होय, तो १८२४१२० प्रकारे * तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति ॥

सर्व जीवराशि खमाने का पाठ।

खामेमि (खमाता हु) सव्वे जीवा (सब जीवों को) सव्वे जीवा खमतु में (सब जीव मेरे अपराध को माफ करो) मित्ती मे सव्व भूएसु (मित्रता है मेरे सब जीवों मे) वेरमज्झ न केणइ (वैर भाव मेरे नहीं किसी से) एव मह (इस तरह में) आलोइअ (प्रकाश किया) निंदिय (निंदा करी) गरहिय (गुरु सन्मुख गर्हणा करी) दुगछिअ (दुगन्छा करी) सम्म (अच्छी-तरे) तिविहेण पडिक्कतो (त्रिविध प्रतिक्रमता हुआ) वदामि (नमस्कार करता हु) जिणे चउव्वीस (जिन चौवीसोंको ॥ इति ॥

समुच्चय पच्चक्खाण का पाठ।

गठि सहिय, मुट्ठि सहियं, नवकारसी, पोरसी, साढा पोरसी आप आपनी धारणा प्रमाणे तिविहपि, चउव्विहपि, आहार, असण, पाण, खाइम, साइम, अन्नत्थणा, भोगेण, सहसागारेण, महत्तरागारेण सव्वसमाहि,वत्तियागारेण, वोसिरे+वोसिरे। इति॥

प्रतिक्रमण सूत्र समाप्त

---

*प्रात काल को सदा ही 'राइसि' और सायकालको देवसि तथा पक्खी चतुर्मासी सवत्सरी, को देवसि पक्खी आदि तस्स मिच्छामि दुक्कड के पहले ही उसके साथ में कहना।

+आप स्वयमेव करे जब वोसिरामि २ बोलना।

प्रतिक्रमण करने की विधि

निर्जीव स्थान में शुद्धतापूर्वक एक आसन पर बैठकर तीन वार तिक्खुत्त के पाठ से श्री मंदिर स्वामीजी को या वर्तमान में अपने गुरु महाराज को खड़े हो वदना करके चौवीसत्थव की आज्ञा लेकर चौवीसत्थ करे।

फिर तिक्खुत्ते के पाठ से तीन वार वदना करके (राइमि या दैवसि, देवसिपक्खी, देवमि चतुर्मासी, देवमि संवत्सरी प्रतिक्रमण करने की आज्ञा है, इसप्रकार कह प्रथम 'इच्छामिणं भंते, का पाठ कह नमोकार मन्त्र का एकवार उच्चारण करे। तत्पश्चात् तिक्खुत्ते के पाठ से वदना कर 'प्रथम आवश्यक करने की आज्ञा है' ऐसा कह प्रथम आवश्यक करे।

मन्त्र कहकर-ध्यान पारे। तत्पश्चात् प्रथम सामायिक आवश्यक समत्तं" इस भांति कहकर तिक्खुत्ते के पाठ से वंदना कर, "दूसरा आवश्यक की आज्ञा है' ऐसे उच्चारण करने के पश्चात् द्वितीय आवश्यक करे।

[द्वितीय आवश्यक]

द्वितीय आवश्यक में 'लोगस्स' के पाठ का प्रगट पाठ करे। फिर सामायिक चौवीसथव दो आवश्यक समत्त, ऐसे कहकर तिक्खुत्ते के पाठ से वंदना कर 'तीसरा आवश्यक की आज्ञा है इसप्रकार भाषण करने के पश्चात् तृतीय आवश्यक करे।

[तृतीय आवश्यक]

तृतीय आवश्यक में दोनों घुटने ऊंचे कर हाथ जोड़ 'इच्छामि खमासमणो' के पाठका दोबार पाठ करे। फिर 'सामायिक, चौवीसत्थव, वंदना, तीन आवश्यक समत्त, ऐसे कह 'तिक्खुत्तं' के पाठ से वंदना कर" चौथे आवश्यक की आज्ञा है, इस भांति उच्चारण करने के पश्चात् चतुर्थ आवश्यक करे।

[चतुर्थ आवश्यक]

चतुर्थ आवश्यक में वोही १७ पाठ, जिनका प्रथम आवश्यक के कायोत्सर्ग में चिंतवन किया था, प्रगट उच्चारण करे। फिर तिक्खुत्ते के पाठ से वंदना कर 'श्रावक सूत्र की आज्ञा है' ऐसा कहकर 'तस्स सव्वस्स' का पाठ उच्चारण करे। तत्पश्चात् जीवणा घुटना ऊंचाकर हाथ जोड़ "नमोकार मंत्र" को एक वार उच्चारण कर निम्नोक्त ३१ पाठों का उच्चारण करे—

(१) करेमि भंते (२) चत्तारि मंगलं (३) इच्छामिठामि (४) इरियावहियाए, (५) आगमेतिविहे, (६) दर्शन सम्यक्त्व रत्न (७-३०) बारह अणुव्रत और उनके बारह स्थूल (३१) संलेखना।

फिर एम समकितपूर्वक बारहव्रत संलेखणा सहित। एहने विषे जे कोई अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, जाणता, अजाणता, मन, वचन, काया ये करी सेव्यो होय, सेवायो होय, सेवता प्रत्ये अणुमोद्या होय, तो अनंता सिद्ध केवली नी साखे (राइसि, देवसि, देवसि पक्खी, देवसी चतुर्मासी, देवसि संवत्सरी सम्बन्धी) तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

फिर अठारह स्थानक और 'इच्छामि ठामि' के पाठ बोले। फिर खड़ा होकर 'तस्स धम्मस्स' का पाठ उच्चारण करे। तत्पश्चात् दोनों घुटने ऊंचे कर हाथ जोड़ 'इच्छामि खमासमणो' का पाठ विधियुक्त दो बार पठन करे। फिर दोनों घुटने ऊंधे कर मस्तक को पृथ्वी से लगा दोनों हाथ जोड़ पांच पदों की वंदना करे।

तत्पश्चात् "अरिहन्तजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी साधुजी, जे श्रीमहावीर स्वामीजी की आज्ञा में विहरे छे, तेने सर्वने म्हारी वंदना नमस्कार हुई जो" ऐसे कह सीधे बन बैठ "अनन्त चौबीसी" बोले।

फिर 'आयरिय उवज्झाए' का पाठ कह, 'श्रावकों' (या श्राविकाओं) से खमत खमावणा करने का पाठ पढ़ें, बाद में,

चौरासी लाख जीवायोनि, का पाठ कह कर 'सर्वजीवराशि' का पाठ उच्चारण करे ।

फिर सामायिक, चौवीसत्थव, वंदना, प्रतिक्रमण, ए चार आवश्यक सम्मत्तं' ऐसे कह तिक्खुत्ते के पाठ से वंदना कर, 'पांचवां आवश्यक की आज्ञा है, इसप्रकार भाषणकरके पंचम् आवश्यक करे ।

(पंचम आवश्यक)

पंचम आवश्यक में (देवसि या राइसि, देवसि, पक्खी देवसि, चतुर्मासी, देवसि संवत्सरी) ज्ञानदर्शन चरित्ता चरित्त तप अतिचार पायच्छित्त विशोधनार्थं करेमि काउस्सगं ऐसा कहे ।

फिर नमोकार मंत्र करेमिभंते का पाठ, इच्छामि ठामि का पाठ और तस्स उत्तरी का पाठ पूर्ण कहकर कायोत्सर्ग करे ।

कायोत्सर्ग (ध्यान में) नित्य * लोगस्स के पाठ का चार वार चिंतवन करे । फिर नमोकार मंत्र बोलकर ध्यानपारे। बादमें 'लोगस्स' का पाठ कहकर इच्छामि खमासमणो का पाठ दोनों घुटने ऊंचे कर हाथजोड़ विधिवत् दो वार उच्चारण करे।

---

* पूज्यश्री रत्नचन्द्रजी महाराज की सम्प्रदाय में सदाही चार लोगस्सका ध्यान करने की प्रणाली है ।

कई सम्प्रदायों में पक्खी को १२ चातुर्मासीको २० और संवत्सरी को ४० 'लोगस्स' का ध्यान करने की आम्नाय प्रचलित है विशेष जैसी जिसकी आम्नाय हो उसी प्रकार करें ।

बादमें 'सामायिक' चौवीसत्थव, वंदना प्रतिक्रमण, कायोंत्सर्ग, पांच आवश्यक समत्तं,, ऐसा कहे तिक्खुते के पाठ से वंदना कर, छठा (पच्चक्खाण) आवश्यक की आज्ञा दे, इसप्रकार कह छठा आवश्यक इस प्रकार करे।

(छठा आवश्यक)

छठा आवश्यक में खड़ा हो साधूजी (साध्वीजी) महा राज की उपस्थिति में उन से शक्ति अनुसार करे, पचक्खाण करे। तथा उनकी अनुपस्थिति में समुच्चय पच्चक्खाण के पाठ से पचक्खाण करे।

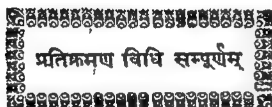
फिर सामायिक, चौवीसत्थव, वदना, प्रतिक्रमण, कायो-त्सर्ग, पचक्खाण, छः आवश्यक समत्त। ऐसे कह ए छः आव श्यक माहीं जाणता, अजाणता, जे कोई अतिचार दोष लाग्यो होय तथा पाठ उच्चारतां कानों, मात्रा, अनुस्वार, पद अक्षर, अधिको, हीणो, आगो, पीछो, कह्यो होय तो तस्समिच्छामि दुक्कड़।

मिथ्यात्वनो पडिकमणो, अव्रत नो पडिक्कमणो, प्रमाद-नो पडिक्कमणो अशुभयोग नो पडिक्कमणो कषायनो पडिक्कमणो ए पांच पडिक्कमणा माहिलो कोई पडिक्कमणो नहीं कीधो होय तस्स मिच्छामि दुक्कड॥

गया काल को पडिक्कमणो वर्तमान काल को संवर तथा सामायिक आवता कालका पच्चखाण, वे माहीं जे दोष लाग्यो होय तस्स मिच्छामि दुक्कड़।

इसप्रकार दोनों हाथ जोड फिर नीचे बैठ डाँवा घुटना ऊँचा रख, दो नमोत्थुण, देवे। तत्पश्चात् श्री मंदिरस्वामीजी, धर्माचार्यजी तथा उपस्थित साधू (साध्वी) जी सबको विधि युक्त तिक्खुते पाठ से वंदना करे।

फिर विद्यमान श्रावकों (श्राविकाओं) से क्षमतक्षमावणा करे। बाद में चौवीसी स्तवन उच्चारण करे।



बादमें '.सामायिक' चोवीसत्थव, वंदना प्रतिक्रमण, कायोत्सर्ग, पाच आवश्यक समत्तं,, ऐसा कहे तिक्खुत्ते के पाठ से वंदना कर, छठा (पच्चक्खाण) आवश्यक की आज्ञा है, इसप्रकार कह छठा आवश्यक इस प्रकार करे।

(छठा आवश्यक)

छठा आवश्यक में खड़ा हो साधूजी (साध्वीजी) महाराज की उपस्थिति में उन से शक्ति अनुसार करे, पचक्खाण करे। तथा उनकी अनुपस्थिति में समुच्चय पच्चक्खाण के पाठ से पचक्खाण करे।

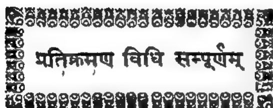
फिर सामायिक, चोवीसत्थव, वंदना, प्रतिक्रमण, कायोत्सर्ग, पचक्खाण, छः आवश्यक समत्त। ऐसे कह ए छः आवश्यक माहीं जाणता, अजाणता, जे कोई अतिचार दोष लाग्यो होय तथा पाठ उच्चारतां कानों, मात्रा, अनुस्वार, पद अक्षर, अधिको, ओछो, आगो, पीछो, कह्यो होय वो तस्समिच्छामि दुक्कड़।

मिथ्यात्वनो पडिक्कमणो, अव्रत नो पडिक्कमणो, प्रमाद-नो पडिक्कमणो अशुभयोग नो पडिक्कमणो कषायनो पडिक्कमणो ए पांच पडिक्कमणा माहिलो कोई पडिक्कमणो नहीं कीधो होय तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥

गया काल को पडिक्कमणो वर्तमान काल को सवर तथा सामायिक आवता कालका पच्चखाण, ते माहीं जे दोष लाग्यो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

इसप्रकार दोनों हाथ जोड फिर नीचे बैठ डांवा घुटना ऊचा रख, दो नमोत्थुण, देवे। तत्पश्चात् श्री मंदिरस्वामीजी, धर्माचार्यजी तथा उपस्थित साधू (साध्वी) जी सबको विधि युक्त तिक्खुत्ते पाठ से वंदना करे।

फिर विद्यमान श्रावकों (श्राविकाओं) से खमतखमावणा करे। बाद में चौवीसी स्तवन उच्चारण करे।



चौवीसी स्तवन

श्री श्री ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व मुनिरजन, चदाप्रभुजिनदेवो। सुविधिनाथ शीतलगुण गाऊं, श्री श्रेयांस वासु पूज्यजी ने ध्याऊ श्री विमल सुनिर्मल देवो। अनन्त धर्म श्री शांतिजिनेश्वर, कुंथुनाथ अति ही अलवेसर, वदू श्री अर्हनाथो। मल्लिनाथ मुनिसुव्रत स्वामी, श्रीनमि नेमपार्श्व अंतरयामी, श्री मुक्ति तणां दातारो। चौवीसमां श्री वीर जिनेश्वर, पर उपकारी साहिब श्री परमेश्वर, पहुंचा है निर्वाणों। इन चौवीसांरा नित्यगुण गावे, दु खदरिद्र तेना दूर पलावे, वर्ते क्रोड़ कल्याणां। पुण्ययोगे मानव भव लाधो, श्री चौवीस जिनवरजी आराधो, तुम लामो लेजोजी तुम लाभा। ए चौवीस भजो सिरनामी, श्री मोटा प्रभु साहिब अवरयामी, मुक्ति तणां दातारो ॥ इति ॥

२४ तीर्थंकरों के नाम।

(१) श्री ऋषभदेवजी (अपर नाम) श्रीआदिनाथजी.
(२) श्री अजितनाथजी
(३) श्री संभवनाथजी
(४) श्री अभिनन्दनजी
(५) श्री सुमतिनाथजी
(६) श्री पद्मप्रभुजी
(७) श्री सुपार्श्वनाथजी
(८) श्री चन्द्रप्रभुजी
(९) श्री सुविधिनाथजी (अपर नाम) श्री पुष्पदन्तजी

(१०) श्री शीतलनाथजी (११) श्री श्रेयांसनाथजी
(१२) श्री वासुपूज्यजी (१३) श्री विमलनाथजी
(१४) श्री अनन्तनाथजी (१५) श्री धर्मनाथजी
(१६) श्री शान्तिनाथजी (१७) श्री कुंथुनाथजी
(१८) श्री अर्हनाथजी (१९) श्री मल्लिनाथजी
(२०) श्री मुनिसुव्रतजी (२१) श्री नेमिनाथजी
(२२) श्री अरिष्टनेमिजी (२३) श्री पार्श्वनाथजी
(२४) श्री महावीर स्वामी (श्रीवर्द्धमानजी)

२० विहरमान के नाम।

(१) श्री मंदिरस्वामी (२) श्री जुगमंदिर स्वामी
(३) श्री बाहूजी स्वामी (४) श्री सुबाहूजी स्वामी
(५) श्री सुजातस्वामी (६) श्री स्वयंप्रभुजी स्वामी
(७) श्री ऋषभानन्द स्वामी (८) श्री अनन्तवीर स्वामी
(९) श्री सूरप्रभु स्वामी (१०) श्री वज्रधर स्वामी
(११) श्री विशालधर स्वामी (१२) श्री चन्द्रानन स्वामी
(१३) श्री चन्द्रबाहू स्वामी (१४) श्री भुजंग स्वामी
(१५) श्री ईश्वरस्वामी (१६) श्री नेमप्रभु स्वामी
(१७) श्री वीरसेन स्वामी (१८) श्री महाभद्र स्वामी
(१९) श्री देवयश स्वामी (२०) श्री अजितवीर स्वामी

११ गणधरों के नाम।

(१) श्री इन्द्रभूतिजी (२) श्री अग्निभूतिजी
(३) श्री वायुभूतिजी (४) श्री विगतभूतिजी

(५) श्री सुधर्मा स्वामी (६) श्री मंडी पुत्रजी
(७) श्री मोरीपुत्रजी (८) श्री अकंपितजी
(९) श्री अचलजी (१०) श्री मेतारजजी
(११) श्री प्रभासजी।

१६ सती के नाम।

(१) श्री ब्राह्मीजी (२) श्री सुन्दरजी
(३) श्री कौशल्याजी (४) श्री सीताजी
(५) श्री राजमतीजी (६) श्री कुंताजी
(७) श्री द्रौपदीजी (८) श्री चंदणाजी
(९) श्री मृगावतीजी (१०) श्री चेलनाजी
(११) श्री प्रभावतीजी (१२) श्री सुभद्राजी
(१३) श्री दमयंतीजी (१४) श्री सुलसाजी
(१५) श्री शिवाजी (१६) श्री पद्मावतीजी

२४ तीर्थंकर, २० विहरमान, ११ गणधर, १६ सती को त्रिकाल वंदना नमस्कार हो जो, तिक्खुतो जाव मत्थएण वंदामि॥

चौदह नियम।

गाथा—सचित दव्वे विगंइ, वाणंह तंबोल वत्थ कुसुमेसु।
वाहण सयण विलेवण, बंभ दिसि

॥ अर्थ ॥

१ सचितः—(जिसमें जीव सत्ता

नमक

(२) द्रव्य'–जितनी चीज मुह में आवे उतने द्रव्य–जल, मजन, दांतन, रोटी, दाल, चांवल, कढ़ी, साग, मिठाई, पूरी, घी, पापड, पान, सुपारी, चूरन, मसाला आदि ।

(३) विगयः–१० है-जिनमें से मधु, माम, माखन, और, मदिरा ये ४ महाविगय अभक्ष होने से, श्रावक को सदा के लिये अवश्य त्याग करने चाहिए और श्रावक के खाने योग्य हैं, घी, तैल, दूध, दही, गुड़, खाड और पकवान पूरी आदि कढ़ाई में तले जाय वह ।

(४) उपानहः–जूता, बूना, स्लीपर, मोजा आदि (जो पाव में पहने जाय)

(५) तंबोलः–पान, सुपारी, इलायची, लौंग, पान, का ममाला आदि ।

(६) वस्थः–पान, पगड़ी, टोपी, साफा, अगरखा, चोगा, कुरता धोती, पायजामा, दुपट्टा, चद्दर, अगोछा, रूमाल, आदि मरदाना और जनाना कपड़ा (जो ओढ़ने पहनने में आवे)

(७) कुसुमेसुः–फूल फूल की चीजे जैसे सेहरा, हार, गजरा, अत्तर (जो सूघने में आवे) आदि ।

(८) वाहनः–(मवारी) गाडी, फिटन, हाथी, घोड़ा, रथ, पालखी, डोली, मोटर, साइकल, रेल, ट्राम्म, नाव, जहाज, स्टीमर बैलून आदि यानि तैरता फिरता चलता और उड़ता ।

(९) शयनः-कुरसी, पलग, गादी, ताकिया, बिछोना, तखत मेज, सुखाशन आदि (सोनें या बैठने की चीजें ।

(१०) विलेपनः-तेल, केशर, चन्दन, तिलक, सुरमा, काजल उबटन, बालबनाना, कथा आदि (जो चीज शरीर लगाई जावे)

(११) बंभ (ब्रह्मचर्य)-स्त्री पुरुष को सुई डोरे के न्याय तथा बाह्य विनोद की सख्या कर लेना चाहिये । श्राव परस्त्री त्याग और स्वस्त्री से ही संतोष रखे, उसका भ प्रमाण करे, इसीप्रकार स्त्रियों को भी समझ लेना चाहिये

(१२) दिसि (१० दिशा):—इतने कोस लम्बा चौड़ ऊंचा, नीचा, जाना, आना, चिट्ठी, तार इतने कोस भेजना माल और आदमी, इतने कोस भेजना तथा मगाना ।

(१३) न्हाण (स्नान):-शरीर से बड़ा स्नान इतना बा करना (छोटा स्नान) हाथ पैर इतनी बार धोना

(१४) भतेसुः-अशन पान खादिम स्वादिम ये चारों आहार में से खाने पीने में जितनी चीजे आवे ।

(चवदे नियम समाप्तम्)



श्रीपूज्य पञ्चक समन्त्र प्रातस्मरणीय प्राकृत स्तोत्रम् ॥
सिरोमुणि सु पुंगवी, गुण रयण सजुत्तो रयणचंदो मुणी ॥
जिण सासण उज्जोयर, गच्छनाहो अन्नाय सुवन्न ॥ १ ॥
ॐ ह्रीँ त्रैलोक्यस, कुरु कुरु स्वाहा मंत सिद्धिं होउ ॥ पसत्थ
मुणि धम्म धरो, तुज्झ निम्मल प्पहावत्तो सया ॥ २ ॥ गुण
सायरो गंभीरो हमीर इय सुनाम पंघराइयो । नियोगच्छनाहु
सयल, कल्लाण रासिंय देउ मवीण ॥ ३ ॥ मुणिश्रो ॐ ह्रीँ
ह्रैँ ह्रँ असि, आउसा साहा मंतो अय। मज्झ मणम्मि चिन्तियं
अज्जे ज्जा गुण गरिम गच्छायरिश्रो ॥ ४ ॥ पचायार पवीणो,
पचा सव पाव मल्ल उद्धूश्रो । मगल कजोड़िमल मुणी, कप्प तरु-
मिन पुरेउ इच्छिय य ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीँ ह्रूँ नमो अरिहताण, इयजप्पे
ऊण जासिद्धी । साएव सुहपुरस्सर, तुज्झ ज्झाणाश्रो मज्झहा
ज्जा ॥ ६ ॥ नाण दसण मजुत्तो, तवो गुणुत्तर विणय चदोमुणी ।
तीय पडिवख गुणन्नू, विजिय विसमसर छिक्ख गाणपसरो
॥ ७ ॥ मरणवधण विमुक्कइ, चइयोससार निसम विसयसुहो । ॐ
ह्रां ह्रिँ ह्रौँ स्वाहा, सिद्धो सिग्ध ममाण होउ मतो ॥ ८ ॥
मणुग्न भिगवद्रेहिं । पूइ य चलण नलिणो गुण समुदो ॥
चिन्तामणि रयण भूश्र, सोभाचदो मुणि समिरणाहो ॥ ९ ॥
ॐ नमो सिद्धाण, मतो श्रोवेउ सुहयर सिद्धिउ । तुहनामप्प
हावत्तो, सयल सतियरय भवि जीवाण ॥ १० ॥ इय मुणिगण
गणिमाला, मगल कुणेउ अपमणाण ॥ धम्मयर सजमाग"
देउममाण भिवमदिर पुज्जा ॥ ११ ॥

इति पुज्य पञ्चक समन्त्रस्तो"
प्राकृत भाषया कृत
समासम्

नकलकर्त्ता
श्रीदुःखमोचन
शर्म्मा

॥ श्री शांतिनाथजी को स्तवन ॥

साता वरते जी। श्री शांति नाम से मुझ मन हरसेजी ॥ साता॥टेर
शांति नाम है कल्प तरु सम, मन वछत फल पावे जी।
रोग शोक दालेदर चींता, सब मिट जावे जी ॥ साता० ॥ १॥
मेघ पाणी से जब्रु वरच का, सब फल तो गल जावे जी।
वैसे आपका नाम समरण से, दुःख टल जावे जी ॥ साता० १॥
मन के लिये जैसे मेरुयादीक दूर कभी नहीं भासे जी।
आप नाम से रीधी सपदा, आवे पासे जी ॥ साता० ३ ॥
सागर चीर समुन्दर मीठो, रसायन अमृत मीठो जी।
इनसे अधीको मीठो शांतिजिन, नाम जो दीठो जी ॥ साता० ४॥
आप नाम दीवाली दसरो, सुख सपत के दाता जी।
आप नाम धन तेरस मारे, गरमें साता जी ॥ साता० ५ ॥
शांति नाम से म्हारे मनमें, अति आनद जो छावेजी।
लक्ष्मीदेवी मारा घर में, दौड़ी आवे जी ॥ साता० ६ ॥
आप नाम चींतामणी पावे, चींता सब भगजावे जी।
कामधेनु म्हारा घरमें दुजे, सब सुख पावे जी ॥ साता७ ॥
सवत उगणी से साल छींहतर चींचवड गामज आया जी।
कार्तिक मास धन तेरस के दिन, आनद पाया जी ॥ साता० ८ ॥
मोतीलाल मुनी मोहन मुरत, पूज्य श्री सुखकारे जी।
आपको वदन करता, वारमवारे जी ॥ साता० ९ ॥ इति ॥



॥ चन्दाप्रभुजी को स्तवन ॥

चँदपुरी नगरी भलीरे महासेण राय उदार,
लिखमा राणी दीपति ज्यारे कूख लियो अवतार
चंदा प्रभू मो मन भावेर दूजो देव दायन आवेरे ॥ चन्द ॥ १ ॥
ससारना सुख भोगवीरे जाण्यो ससार असार
मने वेरागे आणने प्रभु लीधो सजम भार ॥ चन्द ॥ २ ॥
चन्द आनन्द सदा करेरे पातक जावे दूर,
चन्द भजे ससार तरे तो जारे कर्म अक्रूर ॥ चन्द ॥ ३ ॥
सुर नर असुर विद्याधर रे इन्द्र करे ज्यारी सेव,
मोटाराणा राजवी ज्यानू नमे असख्याता देव ॥ चन्द ॥ ४ ॥
और देव घणा देखियारे, जठे घणा जीवांरी घात
कहो जीवां करो कुण ग्रहे ज्यारे लागी चिन्तामणी हाथ। चन्द-५
चन्द सरीखो कोनहींरे मैं जोयो सर्व ससार,
ओर डबोवे ससार मेरे, मोने चन्द उतारे पार ॥ चन्द ॥ ६ ॥
वाणी अमृत सारखी जाणे खीर समद को नीर
वाणी सुन हीया में धरे तो उतरे भवजल तीर ॥ चन्द ॥ ७ ॥
चन्द प्रभु मरणे आवियोरे, हाथ जोड करू अरदास,
कृपा करि शिव दीजिये, रतनचन्द तुमारो दास ॥ चन्द ॥ ८ ॥
पूज गुमानचन्दजी गुरु भेठिया, घणो पाम्यो हर्ष हुलास,
समत अठोर पचासमें, कियो, साहापुर सदर चोमास ॥ चन्द ॥
६ ॥ इति ।

॥ श्री शांतिनाथजी को स्तवन ॥

साता वरते जी। श्री शांति नाम से मुझ मन हरसेजी ॥ साता॥टेर
शांति नाम है कल्प तरु सम, मन वंछत फल पावे जी।
रोग शोक दालीदर चींता, सब मिट जावे जी ॥ साता० ॥१॥
मेघ पाणी से जधु वरच का, सब फल तो गल जावे जी।
वैसे आपका नाम समरण से, दुःख टल जावे जी ॥ साता० १॥
मन के लिये जैसे मेरुयादीक दूर कभी नहीं मासे जी।
आप नाम से रीधी सपदा, आवे पासे जी ॥ साता० ३ ॥
सागर चीर समुन्दर मीठो, रसायन अमृत मीठो जी।
इनसे अधीको मीठो शातिजिन, नाम जो दीठो जी॥ साता०४॥
आप नाम दीवाली दसरो, सुख सपत के दाता जी।
आप नाम धन तेरस मारे, गरमें साता जी ॥ साता० ५ ॥
शाति नाम से म्हारे मनमें, अति आनद जो छायेजी।
लचमीदेवी मारा घर में, दौड़ी आवे जी ॥ साता० ६ ॥
आप नाम चींतामणी पावे, चींता सब भगजावे जी।
कामधेनु म्हारा घरमें दुजे, सब सुख आवे जी ॥ साता७ ॥
सवत बगणी से साल छींहतर चींचवड गामज आया जी।
कार्तिक मास धन तेरस के दिन, आनद पाया जी ॥ साता० ८ ॥
मोतीलाल मुनी मोहन मूरत, पूज्य श्री सुखकारे जी।
सीस आपको वदन करता, वारमवारे जी ॥ साता०६ ॥ इति ॥



॥ चन्दाप्रभुजी को स्तवन ॥

चदपुरी नगरी भलीरे महासेण राय उदार;
लिखमा राणी दीपति ज्यांरे कूख लियो अवतार
चदा प्रभू मो मन भावेर दूजो देव दायन आवेरे ॥ चन्द ॥ १ ॥
ससारना सुख भोगवीरे जाण्यो ससार असार
मने वेराग आणने प्रभु लीधो सजम भार ॥ चन्द ॥ २ ॥
चन्द आनन्द सदा करेरे पातक जावे दूर,
चन्द भजे ससार तरे तो जावे कर्म अकूर ॥ चन्द ॥ ३ ॥
सुर नर असुर विद्याधरु रे इन्द्र करे ज्यारी सेव,
मोटाराणा राजवी ज्यानू नमे असख्याता देव ॥ चन्द ॥ ४ ॥
और देव घणा देखिआरे, जठै घणां जीवांरी घाव
कहो जीकां करो कृपा कहे ज्यारे लागी चिन्तामणी हाथ। चन्द-५
चन्द सरीखो कोनदीरे मैं जोयो सर्व ससार,
और डबोवे ससार मेरे, मोने चन्द उतारे पार ॥ चन्द ॥ ६ ॥
वाणी अमृत सारखी जाणे खीर समद को नीर
वाणी सुन हीया में धरे तो उतरे भवजल तीर ॥ चन्द ॥ ७ ॥
चन्द प्रभु सरणे आवियोरे, हाथ जोड करू अरदास,
कृपा करि शिव दीजिये, रतनचन्द तुमारो दास ॥ चन्द ॥ ८ ॥
पूज गुमानचन्दजी गुरु भेठिया, घणो पाम्यो हर्ष हुलास,
समत अठोर पचासमें, कियो, साहापुर सहर चोमास ॥ चन्द ॥
९ ॥ इति ।



॥ श्री शांतिनाथजी को स्तवन ॥

साता वरते जी। श्री शांति नाम से मुझ मन हरसेजी ॥ साता॥टेर

शांति नाम है कल्प तरु सम, मन वछत फल पावे जी।
रोग शोक दालीदर चींता, सब मिट जावे जी ॥ साता० ॥ १ ॥

मेघ पाणी से जबु वरच का, सब फल तो गल जावे जी।
वैसे आपका नाम समरण से, दुःख टल जावे जी ॥ साता० २ ॥

मन के लिये जैसे मेरुयादीक दूर कभी नहीं भासे जी।
आप नाम से रीधी सपदा, आवे पासे जी ॥ साता० ३ ॥

सागर चीर समुन्दर मीठो, रसायन अमृत मीठो जी।
इनसे अधीको मीठो शांतिजिन, नाम जो दीठो जी॥ साता० ४॥

आप नाम दीवाली दसरो, सुख सपत के दाता जी।
आप नाम धन तेरस मारे, गरमें साता जी ॥ साता० ५ ॥

शांति नाम से म्हारे मनमें, अति आनद जो छावेजी।
लच्मीदेवी मारा घर में, दौड़ी आवे जी ॥ साता० ६ ॥

आप नाम चींतामणी पावे, चींता सब भगजावे जी।
कामधेनु म्हारा घरमें दुजे, सब सुख आवे जी ॥ साता७ ॥

सवत उगणी से साल छींहतर चींचवड गामज आया जी।
कार्तिक मास धन तेरस के दिन, आनद पाया जी ॥ साता० ८ ॥

मोतीलाल मुनी मोहन मुरत, पूज्य श्री सुखकारे जी।
सीस आपको वदन करता, वारमवारे जी ॥ साता० ९ ॥ इति ॥



॥ चन्दाप्रभुजी को स्तवन ॥

चदपुरी नगरी भलीरे महासेण राय उदार,
लिखमा राणी दीपति ज्यांरे कूख लियो अवतार
चदा प्रभू मो मन भावेर दूजो देन दायन आवरे ॥ चन्द ॥ १ ॥

सन्सारना सुख भोगवीरे जाण्यो ससार असार
मन वैराग आणने प्रभु लीधो सजम भार ॥ चन्द ॥ २ ॥

चन्द आनन्द सदा करेरे पातक जावे दूर,
चन्द भने ससार तरे तो जावे कर्म अकूर ॥ चन्द ॥ ३ ॥

सुर नर असुर विद्याधर रे इन्द्र करे ज्यांरी सेव,
मोटाराणा राजवी ज्यान् नमे असख्याता देव ॥ चन्द ॥ ४ ॥

ओर देव घणा देखियारे, जठे घणा जीवांरी घाव
कहो जीकांं करो कुण कहे ज्यारे लागी चिन्तामणी हाथ। चन्द ५

चन्द सरीखा कोनहींरे मैं जोयो सर्व ससार,
ओर हवेरे समार मेरे, मोने चन्द उतारे पार ॥ चन्द ॥ ६ ॥

वाणी अमृत सारखी जाणे खीर समद को नीर,
वाणी सुन हीया में धरे तो उतरे भवजल तीर ॥ चन्द ॥ ७ ॥

चन्द प्रभु सरणे आवियोरे, हाथ जोड करू अरदास,
कृपा करि शिव दीजिये, रतनचन्द तुमारो दास ॥ चन्द ॥ ८ ॥

पूज गुमानचन्दजी गुरु भेटिया, घणो पाम्यो हर्ष हुलास,
समत अठारे पचासमें, कियो, साहापुर सहर चोमास ॥ चन्द ॥
९ ॥ इति ।



॥ लघु साधु वंदना ॥

साधूजी ने वंदणा नितनित कीजे, प्रह उते सूर रे। प्राणी, नीच गोत में ते नहीं जावे, पामे रिद्धि भरपूर रे प्राणी। साधूजीने वंदणा नितर कीजे ॥१॥ म्होटाते पंच महाव्रत पाले छकायरा प्रतिपालेरे प्राणी, भ्रमर भिक्षा मुनि सूजती लेवे, दोष बयालीस टालेरे प्राणी, साधुजी ने वंदणा ॥ २ ॥ ऋद्धि संपद मुनि कारमी जाणी, दीधी संसार ने पूठरे प्राणी, या पुरुषारी सेवा करता आठु कर्म जावे तूटरे प्राणी, साधुजीने वंदणा ॥ ३ ॥ एक एक मुनिवर रसनारा त्यागी, एक एक ज्ञानरा भंडाररे प्राणी, एक एक मुनिवर व्यावचीया वैरागी ज्यांरागुणा रो नाहीं पार रे प्राणी, साधुजी ने वंदणा ॥ ४ ॥ गुणसतावीस करीने दीपे, जीत्या परीसा बाईसरे प्राणी, बावन तो अनाचार टाले, ज्याने नमावु म्हारो शीपरे प्राणी, साधूजीने वंदणा ॥ ५ जाज समान ते संत ऋषिश्वर, भवी जीवे बैठा आयरे प्राणी पर उपगारी मुनि दाम न मागे, देवे ते मुक्ति पहोंचाय रे प्राणी; साधुजी ने वंदणा ॥ ६ ॥ ए सरणे प्राणी साता पावे, पावे ते लील विलासरे प्राणी, जन्म जरा ने मरन मिटावे, फिर नहीं आवे गर्भवासरे प्राणी, साधुजी ने वंदणा ॥ ७ ॥ एक वचन जो सद्गुरु केरा राखे जो मनमाहि रे प्राणी, नर्क निगोद में ते नहीं जावे इम कहे जिनराजरे प्राणी, साधुजीने वंदणा ॥८॥ ... उठी उत्तम प्राणी, सुणे साधुरो वखाणरे प्राणी. ... सेवा करतां पावे ते अमर विमाण रे प्राणी, स... ॥ ९ ॥ समत अठारे ने वर्ष अठावीसे बूसी गाम ... र प्राणी, मुनि आशकरणजी इणि परे बोले हु उतम दास रे प्राणी, साधुजी ने वंदणा ॥ १० ॥ इति ॥

॥ श्री पूज्य श्री रतनचंदजी महाराज रा गुणांरी ढाल ॥
॥ चौपन चौमासा ॥

दोहा—कुल बडजातो श्रावगी, उपना मुनी रतनेस।
भव जीवा तारण तीरण, चाला देश विदेश ॥ १ ॥
संजम चवदा वरस का, लीदो जग सुख त्याग।
चौमासा चौपन कीया, ते दाखु पर राग ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ मोटी हो जग माहे मोहणी या देसी ॥
सायपुरे बड़ोदरे भीलाडे हो दोय तीन चौमास।
कीधा देश मेवाड़ में, बुध नीरमल हो, पडिया गुरु पास ॥ १ ॥
रतन मुनिसर मोटका, जीन मारग रो कीधो उद्योत।
जा पुरपारा प्रसाद थी, मैं पामी हो शुद्ध समकीत जोत। रतन।२
माटा मींदर वड्लु रीयां, रायपुर ने हो जेपुर सुभ ठामे।
एक एक पांचुही नगर में, चौमासे ही लीदो विसराम।, रतन ॥३॥
चार चार अजमेर मेडते, किशनगढ़ में हो दोय तीन पीपाड़।
दास नगी ने पाली इग्यारे कीया, जोधाणो हो चौमासा चार।रतन।४
रया चौपन चत्रमास में, भवीयाने हो तारिया समजाय।
पुर पाटन निचरिया घणा, वसु पावन कीधो मुनीराय। रतन ५॥
मुनी मडल नागोर में, चौमासो हो चौपनमो कीध।
रींया पीपाड़ पधारिया, तन चेष्टा हो वड मरा लीखलीण ॥ रतन ६
गढ़ जोधाणे नरप तपे, हिन्दवाणा हो सूरज तखतेस।
देस दीवाण परमा नीलो, मानींजे हो मुथो लखमेस* ॥ रतन७

* मुथाजी श्री लीखमीचदजी एक जोधपुर में प्रसिद्ध दीवान होगये हैं, आप सच्चे परम दयालु गुरुभक्त थे, आपने श्री स्थानक-वासी जैनधर्म का बहुत ही उद्योत किया।

सुण आगमी सतगुरु तणो, मन हरकीया हो करीये दीदार।
अरज करी दरबार में, हुवो जाणु हो रीया पीपाड़ ॥ रतन ॥८॥
सुं कारण नरप पूछीयो, कर जोड़ी हो जेप दीवाण।
मुनि रतनेस पधारिया, बडा पंडित हो तीनु मतना जाण ॥ रतन ९
बाल ब्रह्मचारी, मोटा तपस्वी, निरलोभी हो उत्तम गुणखांन।
धरम आचारज म्हारे, जासु दरसन हो, होवे कोड कल्याण ॥ रतन १०
धरमारथ पख जाण ने, भले जाणो हो कीधो भूपाल।
सज कर ततचीण नीमरीया, गुरु वांदीया हो निज नेयण नीहाल ११
घड़ा सीखसु चरचा करी, गुरु आगल हो वीनवे लवलेस।
पूज्य जोधाणे पधारीये, वीचरणा रो अवसर नहीं लेस ॥ रतन १२
श्रीमुख कहे जाणीजसी, सुन समजीया हो मन हरस अपार।
गुरु वांदी घर आवीया लारा सु हो, मुनि कीधो वीहार ॥ रतन ॥
चैत्र कृष्ण पख अष्टमी, जोधाणे * हो दाखल रतनेश।
विनयचंद रहे पूज्यरा, जीणे सुनी हो छेला उपदेश ॥ रतन ॥

॥ मुनि श्री चंदनमलजी महाराज का स्तवन ॥

चाल देसी—वलिहारी है सतगुरुजी आपका ज्ञान की जी।

वन्दू वन्दू हो चन्दन मुनि को भारीसंजी,
जन्मे पंचम आरे भविजन के सुभाग्य से जी ॥ टेर ॥

जन्म हुआ रीया गाम मरुधर देश में जी, ओशवंश पिता बछराज।
धरते धर्म ध्यान शुभ साज, करते गरीब जीन के काज ॥ वन्दू ॥ १ ॥

---

* जोधाणे को जोधपुर कहते हैं जो मारवाड़ की राजधानी है॥

माता रिद्धी नांई थी, आपकी जी रखती धर्म विषय में प्यार ।
पाले श्राविका व्रतसार, मनमें निशदिन विमल विचार ॥ वन्द २
शुभ स्वप्न देखा निज सेज में जी, वह स्वप्न था अधिक रसाल ।
जन्मे कुंवर अधिक सुकुमाल, चन्दन नाम अमित गुण नाल ।वन्द ३।
बाल वय उन्नीसे बीसमें जी, पञ्चमी कृष्ण जेष्ठ का मास ।
लिये संयम गुरुजी पास, पाली नाम शहर में खास ॥ वन्द ४॥
विनय भक्ती करी गुरुजी पास में जी, बनगये आप शास्त्र भंडार ।
भविजीवों के बने आधार, निर्मल पाले मुनि आचार ॥ वन्द ५॥
ज्ञान अश्व चढे तपते गले जी, दिये दुष्ट कर्म को मार ।
मनमें शुद्ध भावनाधार, बाल ब्रह्मचारी बलिहार वन्द० ॥ ६॥
गच्छ मानस सरोवर रूप है जी, जल है ज्ञान क्रिया निरधार ।
उत्तम सन्त तरंग विचार, जिसमें दया कमल सुखसार ॥वन्द०॥७॥
मुनि आचार सुगन्धी के लोभ से जी, आवे भक्त भ्रमर सुखकार ।
सुखी करते मुनि आचार, केई जन लेते व्रत को धार॥ वन्द० ८॥
यम-नियम रूप मच्छ घूमते जी, है यह मानसरोवर महान,
चन्दन मुनि हंस सम जान, क्रीड़ा करते ये गुणवान ॥वन्द० ९ ॥
जैसे तप्त पुरुष अंग उपरे जी, चन्दन लेप परम सुखदाय ।
शीतल होती उसकी काय, जाते तन मन अति हुलसाय ॥वन्द १०॥
वैसे भक्तजनों के चित में जी, बसते चन्दन मुनी का नाम ।
मिटते तन मन ताप तमाम, होते सिद्ध सभी सब काम ॥वन्द ११॥
चन्दन मुनिवर के मुखचन्द्र को देखके जी, हर्षित होते भवी चकोर।
आवे दौड़ी आपकी ओर, करते मधुर गुणों का शोर ॥वन्द १२॥
बैठे सिंहासन वाणी वागरेजी, सुनकर मधुर वचन का शोर ।
हर्षे भविजन रूपी मोर, चित्त लगाते मुनि की ओर ॥वन्द १३॥

तारामध्य शोभे जिमचदा शिष्य वृन्द में तिम मुनिन्दाजी,
मुनि आप बालब्रह्मचारी, जिनके गुण की बलिहारी ॥ २ ॥
जल मीन के जैसे आधार, वायु जिमी सब ससारजी ।
तिमी आप सकल जन धारी, जिनके गुण की बलीहारी ॥३॥
जिमी माता सुत को पाले, तिमी आपगच्छ सभाले जी ।
मुनि तन के उग्र विहारी, जिनके गुण की बलीहारी ॥ ४ ॥
आप सदा चिरजीव रहना, भवीजन मन हार्षित करना,
यही सब चाहते नर नारी, जिनके गुणकी बलिहारी ॥५॥ इति

॥ मुनिगुण स्तवन ॥

प्यारे पूज्य बड़े गुणधारी है, श्रीरतन सम्प्रदाय जारी है ॥टेर॥
सोभाचन्दजी महा विद्वान, तसु शिष्य सोभीत है सुजान ।
मुनि भोजराज ब्रह्मचारी है ॥ प्यारे ॥ १ ॥
अमरचद चन्द्रों के जान, लाभचदजी शशि समान ।
सागर आज्ञाकारी है ॥ प्यारे ॥ २ ॥
लालचद चमा के सागर, हसतीमल बहु गुण रतनागर ।
चोथमल सुखकारी है ॥ प्यारे ॥ ३ ॥
लछमीचदजी का चित्त हुलास, विद्या का करते अभ्यास ।
हसराज * ये अर्ज गुजारी है ॥ प्यारे ॥ ४ ॥
सम्वत् उगणीसे असमी साल कार्तिक मास है बडा रसाल ।
शुद्धी तेरस को बुधवारी है ॥ प्यारे ॥ ५ ॥

* यह श्रीमान स्वर्गीय सेठ सुगमलचदजी करणवट के पुत्र हैं आप कविता, स्तवन और छन्द बहुत अच्छे और सुन्दर बनाते हैं आप की उमर इस समय २१ वर्ष की है, "यथा नाम तथा गुण" आप स्थानकवासी जैन है और जोधपुर निवासी है ।

॥ उपदेशक स्तवन ॥

चेतन रखना अब हुशियारी श्रो ॥ टेर ॥
मानुष अवतार, पायो सार समकित धार ।
प्यारे करलो पर उपकारी श्रो ॥ १ ॥
कर्मों के संग, करलो जंग, होनो संग ।
ज्ञान घोड़े पे कर असवारी श्रो ॥ २ ॥
सुनलो व्याख्यान, चतुर सुजान, देवो दान ।
घट में क्षमा करो अंगीकारी श्रो ॥ ३ ॥
सीखो तुम ज्ञान, तज अभिमान, समता ।
सुगुरु सीख करो स्वीकारी श्रो ॥ ४ ॥
पाछुई चोर, करते शोर, अतही जोर ।
तपजप माल को लेत चुराई श्रो ॥ ५ ॥
गफलत से जाग, रख वैराग, ममता त्याग ।
प्यारे ज्ञान की कर रखवाली श्रो ॥ ६ ॥
कहे हंसराज, सारो काज, धर्म की जहाज ।
माही बैठ होवो भवपारी श्रो ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ पूज्य श्री शोभाचन्दजी महाराज का स्तवन ॥

राग —समदरा जांराला थारी बलिहारी हो ।
पूज्य शोभाचंदजी जाणां आपरी बलिहारी हो ॥ टेर ॥
बड़े पुनवन्त, महा गुणवंत ।
उत्तम सन्त थारी कीरती इधक अपारी हो ॥ पूज्य ॥ १

पंडित विद्वान, गुणरी खान, चतुर सुजान ।
आप करते हो पर उपकारी हो ॥ पूज्य ॥ २ ॥
देवो उपदेश, तजकर द्वेष, कर्मो को पेश ।
इस तन को लियो वजमाली हो ॥ पूज्य ॥ ३ ॥
सूत्रों के जाण, शुद्ध व्याख्यान, देवो ज्ञान ।
सुनकर ममत्व मेय नरनारी हो ॥ पूज्य ॥ ४ ॥
पच महाव्रत पालो दोषण टालो, कुंजर गत चालो ।
इरजा को देख सभारी हो ॥ पूज्य ॥ ५ ॥
सज्जन कर सेव, पावो मेव है गुरु देव ।
एतो प्रगट हुए अवतारी हो ॥ पूज्य ॥ ६ ॥
सोहत जग भान, अवसर जान, विनती मान ।
आप कियो चोमासो सुखकारी हो ॥ पूज्य ॥ ७ ॥
कर हमपर मेहर, आये शहर, ज्ञान की लहर ।
थांरी लागी है माने अति प्यारी हो ॥ पूज्य ॥ ८ ॥
हंसराज यह गावे, सेवा चावे, सीस नमावे ।
दीजो मोय भवदधि तारी हो ॥ पूज्य ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ श्री नेमिनाथजीका स्तवन ॥

प्रभुजी जांवोला थारी वलिहारी हो (टेर)
सेवा की नंद, आनंद कंद, उगत चंद ।
जग में आप हुए ब्रह्मचारी हो ॥ प्रभु० १ ॥
यदुपति बंको, पूरत है डंको,
नहीं कोई शंको, धिन धिन तुम अवतारी हो ॥ प्र० २ ॥

आयुधशाला जावे, संख बजावे।
कृष्ण घबरावे. आवत कर ललकारी हो ॥ प्र० ३ ॥
कृष्ण बाय पसारी, नमायडारी।
नेम पसारी लटक गये गिरधारी हो ॥ प्र० ४ ॥
कृष्ण मन सकुचावे, राज यों जावे।
भ्रात समझावे परणाश्रो एकनारी हो ॥ प्र० ५ ॥
कृष्ण महल सिधावे, नेम बुलावे।
व्याह मनावे, जान बनावे, हदभारी हो ॥ प्र० ६ ॥
बनड़ो अति सोवे, मनड़ो मोवे।
प्रसन्न चित्त होवे, मगल गावे नर नारी हो ॥ प्र० ७ ॥
पशु करत पुकारी, करुणा धारी।
त्यागी है नारी, चढगये गढ़ गिरनारी हो ॥ प्र० ८ ॥
गावें हसराज, अहो जिनराज।
सारो काज थाने वन्दू बार हजारी हो ॥ प्र० ९ ॥ इति

॥ श्री पार्श्वनाथजीका स्तवन ॥

प्रणमू पार्श्वजिनन्द सुखकारी हो ॥ टेर ॥
अश्वसेन राय, भोमा माय, तिन कुख आय।
आप प्रगट भये अवतारी हो ॥ प्रण० १ ॥
चिन्तामणि जान, अविचल भान, मेरु समान।
एतो करते हैं उपकारी, हो ॥ प्र० २ ॥
गगातट जाय कमठ हटाय, नाग बचाय।
प्रभुजी किया है सुरअवतारी हो ॥ प्र० ३ ॥

संजम चित्त लाय, केवल पाय, कर्म खपाय ।
प्रभूजी पहुंता है मोच मजारी हो ॥ प्र० ४ ॥
अहो जिनराय, प्रणमु पाय, मन हुलसाय ।
हंसराज यह अरज गुजारी हो ॥ प्रणमु ५ ॥ इति ॥

पालनो ।

रतन जड़तरो पालनीयो कोई रेसम सेती बनीयो रे कोई ।
जग जननी ने जनीयोरे माताजी हुलरावे. नेमजीने रागसुनावेरे॥१
कोई सोनारी सांकल लवे कोई पालनीये पधावे ।
कोई अदवीचे झुनर टांकेरे. माताजी हुलरावे ॥ २ ॥
कोई सिर पर टोपी मेले कोई अधर हात ग्रु झेले ।
नानड़ियो बालक खेलेरे माताजी हुलरावे ॥ ३ ॥
मनगमतो बालक खेलेरे माताजी हुलरावे. नेमजीनेरागसुनावेरे४
कोई खोलामें खिलाने, कोई काजलटीकी देवे ।
कोई काना में बात केवेरे. माताजी हुलरावे ॥ ५ ॥
कोई हाता में हुलरावे, कोई पालनिया पोढावे ।
कोई कड़ियां दूध पिलावेरे, माताजी हुलरावे ॥ ६ ॥
कोई गीरी गींदोड़ा लाने, कोई घेवरिया छटावे ।
कोई खाजा लाड़ू लावेरे माताजी हुलरावे ॥ ७ ॥
कोई चकरी भमरा लावे, कोई नीरद फली रिझावे ।
कोई घुघरिया घमकावे, माताजी हुलरावे ॥ ८ ॥
कोई चमक नींदसु जागे, कोई रिमझिम करतो भागे ।
थारी सुरत सोवणी लागे, माताजी हुलरावे ॥ ९ ॥

आयुधशाला जावे, संख बजावे ।
कृष्ण घबरावे, आवत कर ललकारी हो ॥ प्र० ३ ॥
कृष्ण बाय पसारी, नमायडारी ।
नेम पसारी लटक गये गिरधारी हो ॥ प्र० ४ ॥
कृष्ण मन सकुचावे, राज यों जावे ।
भ्रात समझावे परणाओ एकनारी हो ॥ प्र० ५ ॥
कृष्ण महल सिधावे, नेम बुलावे ।
व्याव मनावे, जान बनावे, हदमारी हो ॥ प्र० ६ ॥
बनड़ो अति सोवे, मनड़ो मोवे ।
प्रसन्न चित्त होवे, मंगल गावे नर नारी हो ॥ प्र० ७ ॥
पशु करत पुकारी, करुणा धारी ।
त्यागी है नारी, चढगये गढ़ गिरनारी हो ॥ प्र० ८ ॥
गावें हंसराज, अहो जिनराज ।
सारो काज थाने वन्दू वार हजारी हो ॥ प्र० ९ ॥ इति

॥ श्री पार्श्वनाथजीका स्तवन ॥

प्रणमू पार्श्वजिनन्द सुखकारी हो ॥ टेर ॥
अश्वसेन राय, वामा माय, तिन कुख आय ।
आप प्रगट भये अवतारी हो ॥ प्रणु० १ ॥
चिन्तामणि जान, अविचल मान, मेरु समान ।
एतो करते हैं उपकारी, हो ॥ प्र० २ ॥
गंगातट जाय कमठ हटाय, नाग बचाय ।
प्रभुजी किया है सुरअवतारी हो ॥ प्र० ३ ॥

सजम चित्त लाय, केवल पाय, कर्म खपाय ।
प्रभूजी पहुता है मोक्ष मजारी हो ॥ प्र० ४ ॥
अहो जिनराय, प्रणमु पांय, मन हुलसाय ।
हंसराज यह अरज गुजारी हो ॥ प्रणमु ५ ॥ इति ॥

पालनो ।

रतन जड़तरो पालनीयो कोई रेसम सेती पनीयो रे कोई ।
जग जननी ने जनीयोरे माताजी हुलरावे नेमजीने रागसुचावेरे॥१
कोई सोनारी साकल लवे कोई पालनीये वधावे ।
कोई अदवीचे कुंवर टांकेरे. माताजी हुलरावे ॥ २ ॥
कोई सिर पर टोपी मेले कोई अधर हात सु झेले ।
रानड़ियो बालक खेलेरे माताजी हुलरावे ॥ ३ ॥
रनगमतो बालक खेलेरे माताजी हुलरावे. नेमजीनेरागसुचावेरे४
कोई खोलामें खिलावे, कोई काजलटीकी देवे ।
कोई काना में बात केवेरे, माताजी हुलरावे ॥ ५ ॥
कोई हाता में हुलरावे, कोई पालनिया पोढावे ।
कोई कड़ियां दूध पिलावेरे, माताजी हुलरावे ॥ ६ ॥
कोई गीरी गींदोड़ा लावे, कोई घेवरिया छटावे ।
कोई खाजा लाडू लावेरे माताजी हुलरावे ॥ ७ ॥
कोई चकरी भमरा लावे, कोई नीरद कली रिझावे ।
कोई घुघरिया घमकावे, माताजी हुलरावे ॥ ८ ॥
कोई चमक नींदसु जागे, कोई रिमझिम करतो भागे ।
पारी सुख सोवणी लागे, माताजी हुलरावे ॥ ६ ॥

कोई ऋषभदत्तसताजोगे, कोई रीध पामे पुण्यजोगे।
कोई करणीरा फल जाणेरे, माताजी हुलरावे ॥ १० ॥
कोई करणीरा फल पावेरे,माताजी हुलरावे नेमजीने,रागसुनावेरे११

॥ श्री जंबु स्वामीजी रो स्तवन ॥

राजगीरीनो वासीयोजी जंबु नाम कुमार ॥
ऋषभदत्तजीना डीकरोजी, भद्राजारी माय ॥
जंबु कह्यो मान लेरे, जाया मत लेवो संजम भार ॥ १ ॥ देसी
सुधर्मा स्वामी पधारीयाजी, राजगीरी रे माय ॥
कोणीक वंदन चालीयाजी, जंबुजी वदन जाय ॥ जंबु ॥ २ ॥
भगवत वाणी वागरीजी, सर्व जिवा हितकार ॥
वाणी सुणी वैरागियाजी, जाणयो अथीर संसार ॥ जंबु ॥ ३ ॥
घर आया माता कने जी बोले' वारंवार ॥
अनुमत दीजो मोरा मातजी, में तो लेसु संजमभार॥ जंबु ॥ ४ ॥
ऐ देसी माता मोरी सांभलाय, जननी लेसु संजम भार ॥
ऐ आठोई कामनीयारे, जंबु अपछररे ऊनियार ॥
परनि ने किम परिहरो, ज्यारे किम निकलसी जमार ॥ जंबु ॥५॥
ऐ आठोई कामणीयारे, जंबु तुज विना विलखारे थाय ॥
रमिया, ठमिया, विना नासरे, ज्यारो वदन कमल कमल विलखाय ॥ जंबु ॥ ६ ॥
मत हिणो कोई मानवी, माता मिथ्या तणो,
पररमणी सु राची रया, माता दुर्गत जासी ॥७॥

पाली पोमी मोटो कियारे, जबु इम किम दो छीटकाय ॥
माता पिता न मेल्या रोवतारे, थारे दया नहीं दिलमाय ॥जंबु॥८॥
ऐ लोठो पाणी पिउए, माता मात ने तात अनेक ॥
सगला रे दया पालसुऐ, जरणी आप समान लेख ॥माता॥६॥
ध्यु आंधारे लाकडीरे, जबु तुमज प्राण आधार ॥
तुज विनारे जग सुनोरे जाया, जरनी जितव राख ॥जबु॥ १०॥
रतन जडितरो पिंजरोए माता, सुगो तो जाणे के फद ॥
काम भोग ससार ना, माता ज्ञानी बताया झुठाफद ॥माता॥११॥
पच महाव्रत पालणारे जबु, पाचो ही मेरू समान ॥
दोप षयालीस टालणारे जबु, लेणो सुजतो आहार॥ जबु॥ १२॥
पच महाव्रत पालसुए माता, पाचुही मेरू समान ॥
दोप नयालीस ठालसुए माता, लेसु सुजतो आहार॥माता॥१३॥
सजम मार्ग दोयलोरे जबु, चलनो खाडा की धार ॥
नदी के किनारे रूखडोऐ माता, कदियक होय विनास॥माता॥१४॥
चांदा निना केसी चादनी रे, जबु तारा निना केसी रात ॥
वीर मिना केसी बेनडी रे, जबु झुरे वारवार ॥ जबु ॥ १५ ॥
दिप बिनारे मदिर सुणोरे, जबु पुत्र बिना परिवार ॥
कथा बिना केमी कामनीरे, जबु झुरे बाराई मास ॥जबु॥ १६॥
मात पिता मेला मिल्याए माता, मिलीयो अनती वार ॥
तारण समर्थ को नहीं ए माता पुत्र पातो परिवार॥माता॥१७॥
मोह मत करो मेरिमाताजिए जरणी मोहो किया बधे कर्म ॥
हालर हुनर काई करो ए माता, करोनी जिन जिनो धर्म॥माता१८
ऐ आठोई कामनीयारे जबु सुख विलसो ससार ॥
दिन पाछा थकारे जबु लिजो सजम भार ॥ माता ॥ १६ ॥

कोई ग्रुमचद्‌ सनाजोगे, कोई रीध पामे पुखजोगे।
कोई करणीरा फल जायेरे, माताजी हुलरावे ॥ १० ॥
कोई करणीरा फल पावेरे, माताजी हुलरावे नेमजीने, रागसुगावेरे११

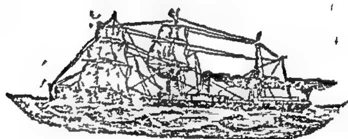
॥ श्री जबु स्वामीजी रो स्तवन ॥

राजगीरीनो वासीयोजी जबु नाम कुमार ॥
ऋषभदत्तजीनो डीकरोजी, भद्राजारी माय ॥
जंबु कह्यो मान लेरे, जाया मत लेवो सजम भार ॥ १ ॥ देसी
सुधर्मा स्वामी पधारीयाजी, राजगीरी रे माय ॥
कोणीक वंदन चालीयाजी, जबुजी वंदन जाय ॥ जबु ॥ २ ॥
भगवत वाणी वागरीजी, सर्व जिवा हितकार ॥
वाणी सुणी वैरागियाजी, जाणयो अथीर ससार ॥ जबु ॥ ३ ॥
घर आया माता कने जी बोले वारंवार ॥
अनुमत दीजो मोरा मातजी, में तो लेसु सजमभार ॥ जंबु ॥ ४ ॥
ऐ देमी माता मोरी साभलाय, जननी लेसु सजम भार ॥
ऐ आठोई कामनीयारे, जबु अवछरारे ऊनियार ॥
परनि ने किम परिहरो, ज्यारे किम निकलसी जमार ॥ जबु ॥५॥
ऐ आठोई कामणीयारे, जबु तुज बिना विलखारे थाय ॥
रमिया, ठमिया, विना नासरे, ज्यारो वदन कमल कमल
निलखाय ॥ जबु ॥ ६ ॥
मत हिणो कोई मानवी, माता मिथ्या तणो भरपूर ॥
पररमणी सु राची दु[illegible] जरूर ॥ माता ॥७॥

पाली पोमी मोटो कियारे, जबु इम किम दो छीटकाय ॥
माता पिता ने मेल्या रोवतारे, थारे दया नहीं दिलमाय ॥जंबु॥८॥
ऐ लोठो पाणी पिउए, माता मात ने तात अनेक ॥
सगला रे दया पालसुऐ, जरणी आप समान लेख ॥माता॥९॥
ज्यु आंधारे लाकडीरे, जबु तुमज प्राण आधार ॥
तुज बिनारे जग सुनोरे जाया, जरनी जितब राख ॥जबु॥ १०॥
रतन जडितरो पिंजरोए माता, सुवे तो जाणे के फंद ॥
काम भोग ससार ना, माता ज्ञानी बताया जुठा फद ॥माता॥११॥
पच महाव्रत पालणारे जबु, पाचो ही मेरू समान ॥
दोप बयालीस टालणारे जबु, लेणो सुजतो आहार॥ जबु ॥ १२॥
पच महाव्रत पालसुए माता, पाचुही मेरू समान ॥
दोप बयालीस ठालसुए माता, लेसु सुजतो आहार॥माता॥१३॥
सजम मार्ग दोयलोरे जबु, चलनो खाडा की धार ॥
नदी के किनारे रूखडोए माता, कदियक होय बिनास॥माता॥१४॥
चांदा बिना केसी चादनी रे, जबु तारा बिना केसी रात ॥
बीर बिना केमी नेनडी रे, जबु झुरे बारबार ॥ जबु ॥ १५ ॥
दिप बिनारे मदिर सुणोरे, जबु पुत्र बिना परिवार ॥
कथा बिना केमी कामनीरे, जबु झुरे बाराई मास ॥जबु॥ १६॥
मात पिता मेला मिल्याए माता, मिलीयो अनती बार ॥
तारण समर्थ को नही ए माता पुत्र पातो परिवार॥माता॥१७॥
मोह मत करो मोरिमात।जिए जरणी मोहो किया बधे कर्म ॥
हालर हुनर काई करो ए माता, करोनी जिन जिनो धर्म।माता१८
ऐ आठोई कामनीयारे जबु सुख विलसो ससार ॥
दिन पाछा थकारे जबु लिजो सजम भार ॥ माता,॥ १९ ॥

ऐ आठोई कामणीयाऐ माता समजाई ऐकण रात ॥
जिण जिनो धर्म ओल खियाऐ माता सजम लेसी मोरी साथ
माता ॥ २० ॥

माता पिता ने तारीयारे जंबु तारी छे आठोई नार ॥
सासु सुसरा ने तारियारे जंबु पाच से प्रभवा परवार॥माता२१॥
पाच से सतारिस जणारे जबु लिनो सजम भार ॥
इग्यारे जणा मुगत गया, ज्यारे वरते जेजेकार॥ जबु ॥ २२ ॥



शांतीनाथजीरो जाप।

चेईचा. मारह. चाम. ॥ चक्कवट्टी. महिट्टीउ ॥
शाती, शांती करेलोए ॥ पत्तोगइमणत्तरं ॥ १ ॥

॥ श्री शांतीनाथ स्वामीनो छंद ॥

शातीनाथ को कीजे जाप, क्रोड भवाना काटे पाप
शांतीनाथजी म्होटा देव, सुर नर सारे जेहनी सेव ॥ १ ॥
दुख दारिद्र होवे दुर सुख सपति होवे भरपूर
ठग फागर जावे भाग, बळती होवे शीतळ नाथ ॥ २ ॥
राज लोकमा कीर्ती घणी, शांती जिनेश्वर माथे धणी ॥
जो ध्यावे प्रभुजी नुं ध्यान, राजादेवे अधीकु मान ॥ ३ ॥
गहगुं पीडा मिटजाय, देखी दुस्मन लागे पाय।
सगळो भाग्यो मननो भर्म, पाम्यो सम काव्या कर्म ॥४॥
सुणी प्रभु मोरी अरदास हुं सेवक तमे पुरो आस ॥
मुज चिंतीत कारज करो, चिंता आरती वीज हरो ॥ ५ ॥
मेटो म्हारा आळ जजाळ, प्रभु मुजने तु नयण निहाल ॥
आपनी कीर्ती ठामोठाम, सुधारो प्रभु म्हारा काम ॥ ६ ॥
जो नित्य नित्य प्रभुजीने रटे, मोती नगला कटे।
चेप लागण दोनु जळ जाय, विपद आपद कट जावे छांव७
शातिनाथना नामथी थाय आखे तुठ पडळ कठजाय।
कमलो पीलो जब जब झरे, शांतिजिनेश्वर शाता करे॥८॥
गरमी व्याधी मिटावे रोग, सयण मित्रनो मले सजोग ॥
दगा देवने दीस ओर, नही चाले दुश्मन को जोर॥ ९ ॥

छठारां सब जागे नाश, अर्जन फीटी होवे दास
शांतीनाथनी कीर्ती घणी, कृपा करो तुम त्रिभुवन धणी॥१०
अरज करुं छुं जोड़ी हात, आपसु नहीं कोई छानी नात॥
देखी रह्या छो पोते आप, हो प्रभूजी म्हारा पाप ॥११॥
मुज मन चिंतित कीरिये काज, राखो प्रभुजी म्हारी लाज॥
तुम सम जग माही नहीं कोय, तुम भजवाथी शाता होय १२
तुम पासे चले नहीं मरकी रोग, ताव तेजरो नाव तोड॥
मारी मिठाई कीधी प्रभु शात, गुणनो नही आवे अत १३
तुमने समरे साधु सती, तुमने समरे जोगी जती ॥
काटो सकट राखो मान, अविचळ पद आपो स्थान॥१४॥
सवत अठारे चोरासी जाण, देश माळवो अधिक वखाण॥
शहर जावरो चेतर मास, हू प्रभु तुम चरणाको दास ॥१५॥
रुपिरुषनाथजी कीधो छंद, काटो प्रभूजी म्हारा फंद ॥
हू जोऊ प्रभुजीनी वाट, मुज आरती चिंता सविकाट॥१६॥

॥ श्री पारसनाथ स्वामीजी रो स्तवन ॥

अहो अहो पारस्वजी मुज मलीयारे मारा मनरा मनोरथ फलीया,
अहो २ वारऐंठरे ॥ १ ॥
थारी सुरत मोहनगारी रे सहु सगन लागे छे पारी रे,
पेंक नागण नाग ऊगारी रे ॥ अहो ॥
अलबेली सुरत प्रभु थारी रे, थारा मुखड़ा ऊपर जाऊ वारी रे,
तोने मोये सुर अवतारी ॥ अहो ॥ २ ॥
धन धन देवादी देवारे, सुरनर करत तुमारी सेवा रे,
आपो —— सपत ॥ अहो ॥ ३ ॥

तुम नीलवरण सुखदाई रे, तुम सुख अती मोहनगारी रे,
तुम दर्शन हरक अपारी रे ॥ अहो ॥ ४ ॥
प्रभु ते विस्माजी जिनरायारे माता भोमा देवीजी ना जायारे,
हमने दर्शन देवोनी दयाल ॥ अहो ॥ ६ ॥
जे पारमतणो गुण गासी रे भव भवना पातीक जासी रे,
तेनो समकित नीरमळ थासी रे ॥ अहो ॥ ७ ॥
हुतो लुली २ लागु छु पायारे मारा ऊरमे थारा गुण गायारे,
ईम माणक विजय गुण गाया ॥ अहो ॥ ८ ॥

चिंतामणी पारस्वनाथ, हारे हारे पारस्वनाथ ॥ टेर ॥

अरज करू करजोड हारे करजोड़ ॥
आसा तो मारी पूरजोजि पारस्वनाथ ॥ १ ॥
अश्वसेण रायरा कवार हारे २ कवार ॥
भोमादेराणी जानियाजी पारश्वनाथ ॥ चींता ॥ २ ॥
मोच्यकरायो सुरईन्द्र हारे २ सुरईन्द्र ॥
तीलोकी जस छानीयो पारश्वनाथ ॥ चींता ॥ ३ ॥
जलता बचाया नागणी नाग हारे नागणी नाग ॥
प्रभुजी उपगारीयाजी पारसनाथ ॥ ४ ॥
हुवा धरणेन्द्र माहाराज हारे २ माहाराज ॥
साँसण रूखवालीयाजी पारसनाथ ॥ ५ ॥
जो सेवे प्रभुता ये हारे प्रभुता ये ॥
ज्यारी तो सका सुरहरोजी पारश्वनाथ ॥ चींता ॥ ६ ॥
पग २ हुवे प्रभु जित हारे प्रभु जित ॥
रोग सब हरेठलेजी पारसनाथ ॥ चींता ॥ ८ ॥

धन नही मांगु पशु माल हांरे २ प्रभु माल ॥
सेवापुरी मे मेलदीजो पारश्वनाथ ॥ चींता ॥ ८ ॥
मांगु सीवपुर कनो राज, हारे प्रभुराज ॥
गरभ नही आवसाजी पारसनाथ ॥ चींता ॥ ९ ॥
गुरू हीरालालजी प्रसाद हारे २ प्रसाद ॥
चौथमलजी ईम भणेजी पारसनाथ ॥ चींता ॥ १० ॥
संमत १९६८ साल हांरे अडसठ साल ॥
रांमपुर गुण गावीयाजी पारसनाथ ॥चींता ॥ ११ ॥

(चांदा प्रभुजीनोतवनः)

श्री चदाप्रभु मो मन भावेरे, दुजो देव दाय न आवेरे ॥ टेर ॥
चदपुरी नगरी भली रे माहासण राय ऊदार ॥
लीखम्हाराणी दिपती ज्यारी कुख लिया अवतारे ॥ चंदा ॥ १ ॥
समार ना सुख भोगवेरे जा‌णो ससार असार ॥
मन वैरागे आणेन प्रभु लीधो सजम भार ॥ चदा ॥ २ ॥
चद आनद सदा करेरे पातीक जावे दुर ॥
चद भजे समार तीरे तो जावे कर्म अकुर । चदा ॥ ३ ॥
सुरनर असुर विद्या धररे ईन्द्र करे आरी सेव ॥
मोटा राणा राजवि ज्याने नमे असख्याता देव ॥ चदा ॥ ४ ॥
अवरदेव गणा देखीया जठे घणा जिवारी घात ॥
कहोजी काकरो कुण लेट ज्यारे लागो चीन्तामणी हात॥चदा॥
वाणी ईम्रत सारखी जाणे खीर समद्र का नीर ॥
वाणी सुण हीया मे घरतो ऊतरे भवजल तीर ॥ चदा ॥ ६ ॥

चद्र सरीखो नही मे जोयो सरव ससार ॥
और डुबावे ससार जो मोने चद उतारे पार ॥ चदा ॥ ७ ॥
चद प्रभु सरणो आविया हात जोड करू अरदास ॥
किरपा करो शिव दिजीये रतनचंद तुमारो दास ॥ चदा ॥ ८ ॥
पुज्य गुमानचदजी गुरू भेठीया गणा पाम्यो हरक हुलास ॥
समत १८५० मा कयो सायपुर सेहर चोमास ॥ चदा ॥ ६ ॥

श्री गोतमस्वामीजी नो छंद ।

निराजिणेश्वर केरो शिप, गौतमनाम जपो निश दिश ॥
जो किये गौतमनु ध्यान, तो घर विळशे नवे निधान ॥ १ ॥
गौतम नामे गिरिवर चडे, मन वछित हलो मपडे,
गौतम नामे नावे रोग, गौतम नामे सर्व सजोग ॥ २ ॥
जे वैरी वीरूआ वकडा, तस नामे नावे ढुकडा ॥
भुत प्रेत नवि मडे प्राण, ते गौतमना करू वखाण ॥ ३ ॥
गौतम नामे निर्मळ काय, गौतम नामे वाधे आय,
गौतम जिनशासन शणगार, गौतम नामे जय जयकार ॥ ४ ॥
साळदाळ सु रहा धृत गोळ, मन वछित कापड तबोळ,
घरसु घरणी निर्मळ चित, गौतम नामे पुत्र विनीत ॥ ५ ॥
गौतम उग्यो अविचळ भाण, गौतम नाम जपो जग जाण,
म्होटा मदिर मेरू समान, गौतम नामे सकळ विहाण ॥ ६ ॥
घर मयगल घोडानी जोडे, वारू पहोंचे वछित कोडे,
महियण माने म्होटा राय, जो त्रुटे गौतमना पाय ॥ ७ ॥
गौतम प्रणम्या पातक टळे, उतम नरनी संगत मळे,
गौतम नामे निर्मळ ज्ञान, गौतम नामे वाधेवान ॥ ८ ॥
पुन्यवत अव धारो सहु, गुरू गौतमना गुण छे बहु,
कहे लावण्य समय कर जोड, गौतम तुटे सपती कोड ॥ ६ ॥ संपूर्ण

श्री आदिनाथ प्रसंन्न ।

श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तवन ।

चित वेग हरो चिन्तामणि पार्श्वनाथ हमारी ॥ टेर ॥
धरणेन्द्र पद्मावती हुवो, तेरे सेवक को हितकारी ॥ चि० ॥ १ ॥
चिन्तामण पाया सुख प्रगटे इच्छा पूरे सारी,
तु आनन्द कन्द भोमा सुत महिमा वदत विहारी ॥ चि० ॥२॥
वो चिन्तामण कमिहन राखे आपे ऋद्ध अपारी,
तु चेतन चिन्तामण पारप परतक पर उपकारी ॥ चि० ॥ ३ ॥
वो चिन्तामण जड़ पुद्गल है, तिनही के गुण भारी ।
तु ठाकुर त्रिभुवन को स्वामी, आसा पूरवनारी ॥ चि० ॥ ४ ॥

॥ छन्द आदिनाथनो ॥

तुम तिरण तारण भव निवारण भविकमन आनन्दन,
श्री नाभिनदन जगत वदन श्री आदिनाथ निरंजनम् ॥ १ ॥
तुम आदिनाथ अनाद सेवो, भावकर पूजा करो,
कैलास गिरिवर ऋषभ जिनवर चरण कमल हिरदे धरो ॥ २ ॥
ध्यान धूप मान पुष्प अष्ट कर्म हुतासन ।
क्षमा जाप सतोष सेवा, पूजो देव निरंजनम् ॥ ३ ॥
तुम अजितनाथ अजित जीते अष्ट कर्म महाबली,
यह विरध सुणकर सरण आयो कृपा कीजे नाथजी ॥ ४ ॥
तुम चंद पूरण चंदलांछन चद पुरी परमेश्वरो
महासेन नंदन जगत वदन श्री चदाप्रभु जिनेश्वर ॥ ५ ॥

तुम बाल ब्रह्म विवेक सागर, भविक कमल प्रकासनं ।
श्री नेमिनाथ महत दिनकर पाप तिमिर विनासन ॥ ६ ॥
जिन तजिय राजल, राज कन्या काम सेन्या वसकरी ।
चारित्र रथ चढ भये दुलेह सेनक सेव सुन्दर वरी ॥ ७ ॥
तुम तरण तारण सुख कारण इद्र मिलि अस्तुति करे,
श्री पार्श्वनाथ जिनद के पद सुर असुर पाये परे ॥ ८ ॥
तुम कर्म घाता मोच दाता दीन जान दया करो,
सिद्धारथ नंदन जगत वदन श्री वर्धमान जिनेश्वरो ॥ ६ ॥
सुख देवो दुख मेटो, यह मोरी बात है ।
मो गरीब की वीनती सुन जो श्री भगवान है ॥ १० ॥
दर्सन कीजे देव को अधम उधारण वासना ।
सुरगती का सुख भोगो पावो मोच अवासना ॥ ११ ॥
ऐसी महिमा तुम विषे, और धन नहीं कोइए ।
जो चद्रमा जोत होवे नहीं तारागण सोहीये ॥ १२ ॥

॥ अथ कवित ॥

पर्व तयासी लाख कियो जिनराज सुख एक लाख रयो जद ऐसी मन आइ है । भरथ बुलाय समलाय दियो राज सब आप भये लोचकर पच महाव्रतधारी है । प्रथम जिनन्द चन्द कहत बिनोदीलाल ऐसे सत गुरुजी को वन्दना हमारी है ॥

॥ छंद पंच परमेष्टी नो ॥

आदौ नेमी जिननोमी संभवं सुविधां तथा धर्म नाथं महादेव शार्ती शाती करं सदा ॥ १ ॥ अनन्त मुनि सुव्रतं भक्त्या नमीनाथं जिनोत्तम अजितजीत कदर्प चन्द्र चन्द्र सम प्रभोः ॥२॥ आदि नाथ तथा देव सुपासु विमल जिन मल्लीनाथ गुणो प्रास धनुष पच भितस्यते ॥ ३ ॥ अरेह नाथ महावीर सुमति स्वज गत गुरू । श्रीपद प्रभ नामाना भास पूज्य सुर स्वर नाथ ॥४॥ सीतल सीतल लोके श्रेयांस श्रेयसे सदा । कुतनाथ चवामेय, श्रीअभीनन्दन जिन ॥ ५ ॥ जिना नाग नाम भीर बध पच सेष्टी समतत्पं । यत्रोय राजते अत्र तत्र सेष्य निरन्तर ॥ ६ ॥ इस मन ग्रहो सदा भगत्या यात्रोय पूजतं उधो । भूत प्रेत पिशाचारी भय तत्र न भीयते ॥ ७ ॥ सकल गुण निदानां यत्र मेदाभी सुधारी दय कमल कोसो छे मतग छे रूपा ॥ ८ ॥ जय तिलक गुरु श्री सुरीराजस्या, सीयो भदति सुखनिदान मोच लची निवास ॥ ९ ॥

॥ श्री पार्सनाथजी से स्तवन लिख्यते ॥

राग भैरवी

श्री पार्श्वनाथसचाई जिनको कमी रहे नहीं कांई ॥ टेर ॥
वनमें मगल रनमें रचा अग्न होत सितलाई ॥ १ ॥
जहा जहा जावे तहां तहां आदर आनद रग वधाई ॥२॥
कोण करे कोउ द्वेषी जिन वाको बालन वांको थाई ॥३॥
भजन करे सो नव निध पावें विष अमृत होय जाई ॥४॥

॥ श्री हरकचंदजी महाराज का गुण ॥

सकल सवंम दीप्त गुनी नित हित ध्यावे हरक मुनि ।
वस सेने सुख संपत थावे, श्री हरकमुनिको ध्यावे ॥ टेर॥
जो हरक धरी तुम नाम जपो, सकट दुस्मन राय रयो ।
घर पुत्रादिक दौलत थावे ॥ श्री हर० ॥ १ ॥
भूत प्रेत डाकन श्यारी व्याल और नागन काली ।
तुम नाम थकी सब भगजावे ॥ श्री हर० ॥ २ ॥
विकट घाट जल पहाड़ तिहा मृगराज करे गुजार वहां ।
नर तब थई खुस ले आवे ॥ श्री हर० ॥ ३ ॥
तब नाम नराधिप मान लहे, जी जी मुख आगल लोग कहे ।
प्रिय वलभ सब को मन भावे ॥ हर० ॥ ४ ॥
सुद एकादसी उपवास करो, मन वछित तिनके काज सरो ।
और विघन नेड़ो नहीं आवे ॥ हर० ॥ ५ ॥
जो नित जपे तुम जपमाला, वसु कटे असुभ कर्म जाला ।
कुसल खेम कमला लावे ॥ श्री हरख ॥ ६ ॥
श्रीमगन मुनी परसाद थकी शिषरावतरे परतीत पकी,
ते किंचित इम कीरत गावे । श्री हरख मुनीको जो ध्यावे ॥ ७ ॥



श्री गौतमस्वामी नो स्तवन ।

वीर जिनेश्वर प्रणमुं पाय गौतम गुण गाऊ चितलाय ॥
सामल जो साहु नरनार श्री गौतम नमे जै जै कार ॥ टेर ॥

जम्बू द्वीप वड़ो सुनाम गौवर गाम कयो सुभ ठाम ।
वसुभूत ब्राह्मण सुविचार ॥ श्रीगौत० ॥ १ ॥
तिन कुलमांय उपन्या आय, पृथ्वी सुंदरी तेहनी माय ।
इद्रभूति प्रगटे कुलधार ॥ श्री गौत० ॥ २ ॥
सकल विद्यामें पूरण भया पचास वर्ष घरवासे रया ।
लीधो वीर समीपे संजम भार ॥ श्री गौत० ॥ ३ ॥
तीस वर्ष छदमस्त पर रया पूछा कर कर सांसा हरया ।
बांर वर्ष केव किरतार ॥ श्री गौत० ॥ ४ ॥
जोत जोत में रया समाय तिणने सुमर्यां पातक जाय ।
इणमें सांसो नही है लिगार ॥ श्री गौत० ॥ ५ ॥
जो गौतमरो ध्यानज धरे रोग सोग पीड़ा नहीं करे ।
भूत प्रेत नहीं आवे लार ॥ श्री गौत० ॥ ६ ॥
जो गौतमरो लीजे नाम मन चिंत्या सब सर्जे काम ।
आतम सुख पावे सिरदार ॥ श्री गौत० ॥ ७ ॥
गौतम सुमर्यां मनकु जीत तिन घर सगली रूड़ी रीत ।
आपद सकल करे परिहार ॥ श्री गौत० ॥ ८ ॥



श्री चनणमलजी महाराजना गुण ।

मुनि माहाराज आपरा दरसण कर सुख पाया हो महाराज ।।टेर।।
रियां केरा भासिया चऊराजजी तात मा०,
आपरा माता रिघुबाई हो ।। मा० ।। १ च० ।।
उगणीसो नोका समें भाद्र सुक्क पष जाण मा०,
थेतो दशमी के दिन जन्मे हो ।। मा० ।। २ ।।
माता आनद पामियो, निरखी पुत्र दिदार मा०,
थेतो हर्ष हर्ष हुलरावे हो मा० ।। ३ ।। च० ।।
अनुक्रम में मोटा हुआ माता राखे लाड़ मा०,
थाने हित घर बहुत पढ़ावे हो मा०, ।। ४ ।। च० ।।
उगणीसो बीसा समें जेष्ट कृष्णपंच जाण मा० ।
थेतो पचमी के दिन शुभ कारी हो मा० ।। ५ ।। च० ।।
लगुनय में सयम लियो पाली सहर मजार मा०,
थाने कनीराम गुरु मिलिया हो मा० ।। च० ।। ६ ।।
बुद्धि तीखी आपकी लियो विनय सुग्यान मा०,
थाने सतगुरु घोत सरावे हो मा० ।। च० ।। ७ ।।
सूत्र वांचो चूपसे भिन्न भिन्न करो व्याख्यान मा०,
थारा नरनारी गुण गावे हो मा० ।। च० ।। ८ ।।
अम्रत धारा आपकी सुरत लेह अनेक मा०,
थारी महिमा अपरपारी हो मा० ।। च० ।। ९ ।।
चरचा में चोकम गणा अनुमत आवे चाल मा० ।
थाने हित धर बहु समजावो हो मा० ।। च० ।। १० ।।
खेम मुनी सग सोहता हस गुणा गभीर मा०,
ए तो भोजराज वेरागी हो मा० ।। च० ।। ११ ।।

मायत विरध विचारने गुनो करो बखसीस मा०,
मारी नैया पार उतारो हो मा० ॥ च० ॥ १२ ॥
उगणीसे चोसट में पीपाड़ सेरो काल मा०,
एतो माहासुद पचम गाया हो मा० ॥ च० ॥ १३ ॥
सरणे आयो आपके दीजो पार उतार मा०,
थारा सुजाण एह गुण गाया हो मा० ॥ च० ॥ १४ ॥

श्री सीतलनाथजीनो स्तवन ।

श्री शीतल जिन साहबाजी सुन सेवक अरदास ।
शिवदाता दुधता हरी थे दो शिवपुर वास,
जिनेश्वर वंदिये जी मोह वगत सूर जिनेश्वर वदिये जी,
पामे परमानद जिनेश्वर वदियेजी दुख टलजावे,
दूरक पाप निकदिये जी, पामे सुख भरपूर जिनेश्वर वदियेजी ॥टेर॥
काम भोगनी लालसा थिरतन धरे मन,
पिण तुम भजन प्रताप थी दाजे दुरमत वन ॥ जि० ॥ १ ॥
लोह अड़े पारस जाइजी सोनो न हुवे तेह,
लोहनो सुत्रीगड़पिण पारस पड़े सदेह ॥ जि० ॥ २ ॥
चिंतामण संग्रहाजी नर सुखियो नहीं होय,
जद मनमें सका पड़े ओ रतन न दीखे कोय ॥ जि० ॥ ३ ॥
निसदिन सेवा सारताजी सामसरे जे काम,
जिणरी इधकाइ किमी पिण होय तार्यांको नाम ॥ जि० ॥ ४ ॥
सेवक साहब ने इयांजी काम न सारे कोय,
चाकर ने सुमेहरणी पिण मोटा ने होय ॥ जि० ५ ॥

बालक जो हट ही करे जी तो हारे माई ॥
हूं बालक तुम आगले बोलु छु इण रीत ॥ जि० ॥ ६ ॥
सवत अठारे पचावने जी मेघनीपुर मज ठाम ॥
पूज्य गुमानचदजी प्रसाद से रत्न करे गुणगान ॥ जि० ॥ ७ ॥
चेतन तु ही तारसी जी तुम परमेश्वर रूप ॥
पिण प्रभुना गुण गावताजी प्रगटे निज स्वरूप ॥ जि० ॥ ८ ॥

॥ श्री महावीर स्वामी नो स्तवन ॥

वीरथनाथ सिधारथ सुतका नित नित सुमिरन कीजे ॥
दिन दिन वधे सवाइ प्रभुता सकल मनोरथ सीजे ॥ टेर ॥
जिण घर कल्पवृक्ष चित्र मेली काम धेनु दुहीजे ॥
काम कुम्भ चिन्तामणि पारस बहुत भोग लहीजे ॥ १ ॥
तिण सु अधिक रूप प्रभुजी को जो निश्चे चित दीजे ॥
जिण घर कुमि रहे नहीं कांइ रिद्ध सिद्ध वृद्ध पामीजे ॥ २ ॥
पुद्गल वस्त सकल इन भवकी मिली यथा लग लीजे ॥
प्रभू का नाम मिले जो सपत गत भव ओखे कहीजे ॥ ३ ॥
ज्यु पणीयारण को चित कुभ में त्यों प्रभू में चित दीजे ॥
विनयचद आपो शिव सुखनो जो निश्चल चित दीजे ॥ ४ ॥



श्री पारश्वनाथजी नो स्तवन ।

पास प्रभू श्रास पूरो देवो शिवपुर वासजी,
त्रास गर्भावास मेटो हु थारो चरणा रो दास ॥
प्रभू मानै एक आपरो आधार ॥ टेर ॥
ऊठत बैठत सोवत जागत बसरयो हृदय मजार ॥ १ ॥
मात तात और नाथ तुही तु खाविंद किरतार ॥
सज्जन वल्लभ मित्र तुही तुहीज तारण हार ॥ २ ॥
प्रभू कैयक पर्वत पहाड़ तरवर सरवर नावत गग ॥
माने तो तन मन वचन करने एक तुम सुरग ॥ ३ ॥
हु मतहीन लेलीन जग में पुद्गल ने परपच ॥
अवगुण भरियो देख साहब आप माडीखंच ॥ ४ ॥
भवसागर में बहु निध भटक्यो,
पुद्गलपुरी अनेक छेदन भेदन बहोत पामी ॥
अब तो सामो देख ॥ ५ ॥
सरणे आता जन कितरी जो साहब सिरदार ॥
लोह कचन होत छिन में परस्यो पारपनाथ ॥ ६ ॥
काष्ट फाड़ी नाग काढ्यो सिमेरे वो नवकार ॥
धरणिन्द्र पद्मावती हुवो श्रो प्रभु नो उपकार ॥ ७ ॥
गरिबनवाज वृद्ध निहारो तारीजो माहाराज ॥
सेवक निज सरण आयो आपने अन लाज ॥ ८ ॥
कमठमन भजन सुखदाता भय भंजन भगवत ॥
विनयचद करजोर वीनवे नीचे नमावे सीस ॥ ९ ॥

(स्तवन उपदेशी)

हां उमर अंजन ज्यु जावे ॥
नर जाणे दिन जाय दिन जाणे नर जावे रे ॥ टेर ॥
पच इन्द्रियां को अजन भारी दसों दवार गाड़ी सब त्यारी ॥
पाप पुन गार्ड गाड़ी को वग चलावे रे ॥ १ ॥ हा उमर ॥
चले रेल ज्युं साम उसासा विना तार चलने नहीं आसा ॥
खबरदार जट होय मुसाफिर गाड़ी आवेरे ॥ २ ॥ हां० ॥
दया धर्म का टिगट बनाया साच झूठ दोय शत्रू आया ॥
सांच को नहिं है आंच झूठ कु परा फुकावारे ॥ ३ ॥ हा० ॥
मास दिनस की वर्णा हैं चोकी एक वर्ष स्टेशन देखी ॥
बीते वर्ष जब कोई स्टेशन जकसन आवेरे ॥ ४ ॥ हां०॥
जकसन उपर तुरतज रोके दया धर्म का टिकटज देखे ॥
माया कुटुम्ब परवार उठे नहीं अर्थ न आवेरे ॥ ५ ॥ हा० ॥
अजन उपरे ओफिसर भारी साच झूठ की करे निरधारी ॥
देख दया टिकट मुक्त कु तुर्त पहुचावेरे ॥ ६ ॥ हां० ॥
च्यार गती में भूल्यो भटक्यो मोह माया में ऊंधो अटक्यो ॥
जवरमल कहे जीव प्रभु का गुण क्यों नहीं गावेरे ॥७॥ हां० ॥

(स्तवन उपदेशी)

दम का नहीं भरोसा रे करले चलने का सामान ॥
लख चोरासी भ्रम के आयो गर्भ किया अस्थान ॥१॥ दम० ॥
उत्तम कुल में जन्म लियो है सुख में खान पान ॥
भीर पडिया तेरे कोई न साथी साथी पुन और पाप ॥ दम० ॥२॥

आसा तृष्णा भूख और निद्रा कुमत रूप निधान ॥
दिन दिन वधे पाप का संगत व्यापो क्रोध और मान ॥ दम० ॥३॥
झूठा सब ही जगत पसारा नारी विष की खान ॥
माया लोभ भयो अब अधिको व्यापो गर्भ अभिमान ॥दम०॥४॥
पांचो चार मुसाफिर तेरे इन की खोटी वाण ॥
इतना चोर बसे तो अन्दर मोह बड़ा सुलतान ॥ ५ ॥ दम० ॥
दो दिन का है गोकुल रामा घर तिरिया खान ॥
काल वेरी थारे सिरपर खेले सांधि रयो है बान ॥६॥ दम० ॥
भाइ बंध सब सगा सम्बन्धी राखे थारो मान ॥
अंत समें कोई काम न आवे किसो मान गुमान ॥७॥ दम० ॥
जप तप सील करो सत संगत साधु सुपात्र दान ॥
सेवो साधु पंच महा व्रतधारी प्रभु भज तज अभिमान ॥८॥ दम० ॥

॥ श्री नेमनाथजी रो स्तवन ॥ देशी झलारी ॥

नेमी सिर बनड़ा ने गिरनारी जाता राखलीजोए ।
सयां मोरी राखलीजोए सयां ए,
मारा नेमी सिर बनड़ा ने गिरनार जाता राखलीजोए ॥ टेर ॥
समन विजयजी का लाडला ए माय, स० ।
हलधर दोनोइ लार पिताजी जाय कहिजोए ॥ १ ॥ सया० ॥
नेमी सिर बनड़ो परण्यो ए माय, स० ।
खुब बणी छे नरात ऊंचा चढ़ जाऊ लीजोए ॥ २ ॥ सया० ॥
नेमी सिर तोरण आवीयो ए माय, स० ।
पसुवांरी सुणी पुकार पाछो रथ फेर लीनोए ॥ ३ ॥ सयां० ॥

तोडया छे कांकण डोरडा ए माय, स० ।
तोडया छे नवसर हार दिक्षा वन जाय लीनीए ॥ ४ ॥ सयां० ॥
अव हु अथिरो छोडसु ए माय, स० ।
जाय मिलू गिरनार कर्म फल तोड लेसुए ॥ ५ ॥ सयां० ॥
सेवक सुभ चितवे ए माय, स० ।
मागु छु शिवपुर वास अर्ज मेरी मान लीजो ए॥ ६ ॥ सयां०॥

(स्तवन उपदेशी) राग बिहाग ॥

यह भेद सील का जाने जो हे सतवंती नारी ॥ टेर ॥
पर पुरुषों से बात न करणा, लम्पट जन का साथ न करणा ।
परघर वासा रात न रहणा, काम कथन मत गारी ॥१॥ जो०
एक आसन पर कबहु न बैठो, पर पुरुषन का साथ न भेटो ।
पिता भ्राता पति तुम भेटो, बनो कुटुम्बी प्यारी ॥ २ ॥ जो०
पर पुरुषां का अंग ना निरखें, अग कीरत सुण मन में मत हरषे।
कुदुल सरज को मन में परखो, तुम भूमी नीगे रख चालरी ॥३॥ जो०
हाट बाट में खडीयन रहना, अकेली घर में नहीं सोना ।
जेनी समय वृथा नहीं खोना, लीजे सुजस पधारी ॥४॥ जो०

स्तवन लावणी ।

खबर नही या जुग में पलकी रे, खबर नही या जग में पल की रे।
सुकृत करणा होय तो करले कुण जाणे कलकी रे ॥ टेर ॥
या दोस्ती है जंगल वास की काया मडल की ।
स्वामो स्वास सुमरले साहब आयु घटे पलकी ॥१॥ खबर०

आसा तृष्णा भूख और निद्रा कुमत रूप निधान ॥
दिन दिन वधे पाप का संगत व्यापो क्रोध और मान ॥ दम० ॥
झूठा सब ही जगत पसारा नारी विष की खान ॥
माया लोभ भयो अब अधिको व्यापो गर्भ अभिमान ॥दम०॥
पांचो चार मुसाफिर तेरे इन की खोटी वाण ॥
इतना चोर वसे तो अन्दर मोह बड़ा सुलतान ॥ ५ ॥ दम० ॥
दो दिन का है गोकुल रामा घर तिरिया खान ॥
काल वेगी थारे सिरपर खेले साधि रयो हे तान ॥६॥ दम० ।
भाइ वंध सब सगा सम्बन्धी राखे थारो मान ॥
अत समें कोई काम न आवे किनो मान गुमान ॥७॥ दम० ।
जप तप सील करो सब संगत साधु सुपात्र दान ॥
सेवो साधु पच महा व्रतधारी प्रभु भज तज अभिमान ॥८॥ दम०

॥ श्री नेमनाथजी रो स्तवन ॥ देशी झलारी ॥

नेमी सिर वनड़ा ने गिरनारी जाता राखलीजोए ।
सयां मोरी राखलीजोए सयां ए,
मारा नेमी सिर वनड़ा ने गिरनार जातां राखलीजोए ॥ टेर ॥
समन विजयजी का लाडला ए माय, स० ।
हलधर दोनोइ लार पिताजी जाय कहिजोए ॥ १ ॥ सयां० ॥
नेमी सिर वनड़ो परणो ए माय, स० ।
खूब बणी छे वरात ऊंचा चढ़ जाक लीजोए ॥ २ ॥ सयां० ॥
नेमी सिर तोरण आवीयो ए माय, स० ।
पसुवांरी सुणी पुकार पाछो रथ फेर लीनोए ॥ ३ ॥ सयां० ॥

तोडया छे कांकण डोरड़ा ए माय, स० ।
तोडया छे नवसर हार दिवा वन जाय लीनीए ॥ ४ ॥ सयां० ॥
अब हु अभिप्रो छोड़सु ए माय, स० ।
जाय मिलू गिरनार कर्म फल तोड़ लेसुए ॥ ५ ॥ सयां० ॥
सेवक सुभ चितवे ए माय, स० ।
मागु छु शिवपुर वास अर्ज मेरी मान लीजो ए ॥ ६ ॥ सयां० ॥

(स्तवन उपदेशी) राग विहाग ॥

यह भेद सील का जाने जो है सतवती नारी ॥ टेर ॥
पर पुरुषों से बात न करणा, लम्पट जन का साथ न करणा ।
परघर वासा रात न रहणा, काम कथन मत गारी ॥१॥ जो०
एक आसन पर कबहु न बैठो, पर पुरुषन का साथ न भेटो ।
पिता भ्राता पति तुम भेटो, बनो कुटुम्बी प्यारी ॥ २ ॥ जो०
पर पुरषां का अंग ना निरखें, अंग कीरत गुण मन में मत हरखे ।
कुडुल सरवा को मन में परखो, तुम भूमी नीगे रग चालरी ॥३॥ जो०
हाट बाट में खड़ीयन रहना, अकेली घर में नहीं सोना ।
लेनी समय वृथा नहीं खोना, लीजे सुगत पधारी ॥४॥ जो०

स्तवन लायणी ।

खबर नही या जुग में पलकी रे, खबर नहीं या जग में पल की रे
सुकृत करणा होय तो करले कुण जाणे कलकी रे ॥ टेर ॥
या दोस्ती है जगल वाम की काया मडल की ।
स्वामी न्याम सुमरले माइय आयु घटे पलकी ॥१॥

तारा मंडल रवी चन्द्रमा सबही चलने की।
दिवस चार का चमत्कार ज्यों बिजली जनकी ॥२॥ खबर०
कूड़ कपट कर माया जोड़ी कर वातां छलकी।
पापकी पोटली बांधी सिर पर कैसे होय हलकी ॥३॥ खबर०
या जुग है सपना की माया जैसे बूंद है जलकी।
बिणसता तो वार न लागे दुनिया जाय खलकी ॥४॥ खबर०
मात तात सुत बंधु भाइ सब जग मतलब की।
काया माया नार हवेली ए थारी कचकी ॥५॥ खबर०
मन भावत तन चञ्चल हस्थी मस्ती है बलकी।
सतगुरु अङ्कुस धरो सीस पर चल मारग सतकी ॥६॥ खबर०
जबलग हंसा रहे देह में सुखियां मंगल की।
हंसा छोड़ चले जब देही मटिया जंगल की ॥७॥ खबर०
पर उपकार सम नहीं सुकृत घर समता सुखकी।
पाप नहीं पर प्राणी पिडन हर हिंसा दुखकी ॥८॥ खबर०
कोइ गोरा कोइ काला पीला नयन निरखन की।
ए देखी मत राचो प्राणी रचना पुद्गल की ॥९॥ खबर०
अनुभव ज्ञान आतम बुजी कर वाता सत की।
अमर पद अरिहत को ध्याया पदवी अविचलकी ॥१०॥ खबर०
दया धर्म साहब को सुमरण ए बाता सत की।
राग द्वेष उपजे नहीं जिनको वीनती अखमल की ॥११॥ खबर०



॥ स्तवन नेमीनाथजी नो ॥

रंगीला नेमजी माने दरसण दो माहाराज ॥ टेर ॥
समद विजय सुत सामलो जी सेवा देजी को नन्द ।
द्वारवतीना राजीया माने दीठा आवे छे आनन्द ॥१॥ रंगीला०
जीवदयारे कारणेरे पसुवारी सुणी पुकार ।
गुण अवगुण मुज नालण्या स्वामी कहीं छोडी निरधार॥२॥रंगीला०
हूस हुती मन म गणीजी भेटण से भरतार ।
ए सुख में किम वीसरूजी मुक्त गया निरधार ॥३॥ रंगीला०
नवभव केरो नेहड़ोरे ओ किम छूटत नेम ।
हु जाणती मन में गणीरे निपट निरंजन नेम ॥४॥ रंगीला०
तुमछो नेमीश्वर सांवलाजी राजन रे मन रंग ।
दे दिक्षा स्वामी हाथ सुजी मुक्त मलो माहाराज ॥५॥ रंगीला०
तिर्थंकर बावीस माजी सीलवंत सिरदार ।
सती सेवक सु वीणतीजी होइजो वारम्वार ॥६॥ रंगीला०

स्तवन उपदेसी ।

ओजुग जाल सपनरी माया इमपर क्यों गरनाणारे
घटगई आयु रहन नहीं पावे क्या राजा क्या राणारे । टेर

सुंदर नार खड़ी मुख आगल रूप देख हर्षानारे,
आतमज्ञान इतो नहीं देख सेवट नास मसाणारे ॥ १ ओ० ॥
गादी बेस गर्व अति तोले बोले मगज भराणा
अंतर ग्यान करीने देखो कई गया राज अरु राणारे ॥२ओ०॥

कर कूर कपट निपट धन मेल्यो संच सच एक दाणोरे.
मद छकिया मन में नहीं सोचे सेवट माल विराणोरे ॥३ ओ०॥
थोड़ा दिवस कर्म बहु बांध्या कर कर ने कमठाणारे.
आतम ग्यान करीने देखो सेवट निपट पयानारे ॥ ४ ओ० ॥
छुधित पुरुष सीसतल छाणा जाणे घेवर पेठा भराणारे
उडगई नींद खुली दोय अंख्या अत छाणे का छाणारे ॥५ओ०॥
सपने राज लिया सब जग का सिर पर छत्र धराणारे.
जागे पात्र छत्र की जागा मांग मांग अन खाणारे ॥६ ओ०॥
रत्नचंदजी जुग देखी यथारथ निज गुण मन ठहराणारे
अ क्षर लिख्यो सतगुरु वचने पुद्गल भर्म मिटाणारे॥७ओ० ॥

स्तवन उपदेशी ।

च्यार पोररो दिन हुवेरे लाल चार पोररी रातरे ।
सुजाण नर दोय घड़ी कर आपणीरे लाल ॥
परभव सुखियो थायरे सुजाण नर
कोई चातुर विचारने चेतज्योरे लाल ॥ टेर ॥
साधु कहे सामलोरे लाल आल जजाल में मत हार रे ॥ सु०॥
अल्प सुखारे कारणे रे लाल परभव दुखियो थायरे ॥१ सु०॥
मात पिता सुत कामनी रे लाल अल्प दिनांरो वासरे ॥ सु० ॥
भोला लोग समझे नहींरे लालरे वे त्रियारे पासरे ॥ २ सु० ॥
चाड बड़ा राणा राजवी रे लाल बड़ा बड़ा भोपालरे ॥ सु० ॥
मुछडल्यां बल गालता रे लाल ज्याने लेगयो कालरे ॥सु०३॥
केइ नर हींडे हींडता रे लाल बहु नारी जारे लार रे ॥ सु० ॥

मरण फदेई नहीं आणावा रे लाल जानेई लेगयो कालरे ॥४सु॥
अब हटवाड़े हद मिल्यारे लाल मिली मिली गोता खायरे सु०
इण भव में चेते नहीं रे लाल परभव दुखिया थायरे ॥ सु०५ ॥
आगा तो नेजा फरहरे रे लाल पड़े नगारारी घोर रे ॥ सु० ॥
ऊबो तजे वो घरमारे लाल ओरन लागे लिगाररे ॥ सु० ६ ॥
फोजां तो यणी अति फूटरी चढ़गया सगले इतिहासरे सु० ॥
परमारथ पोते नहींरे लाल थिचमें लेगयो कालरे ॥ सु० ७ ॥
भरत बाहुबल झूझतारे लाल लारों फौजां जारी लाररे ॥सु०॥
मरण थकी उण डरपिया रे लाल छोड दियो संसाररे ॥सु ८॥
धदो करीने धन जोडियारे लाल लाखां ऊपर करोड़ रे ॥ सु०॥
मरणरी वेला मानवीरे लाल लेसी कदोरो तोड़रे लाल ॥ सु ९

स्तयन श्री पूज्य सोभाचंदजी महाराज का गुण।

दर्शन हालोरे हांरे २ म्हारा पुण्य पूज्य पधार्यारे ॥ टेर ॥
जेपर नागोर विचरत २ उपकार घणेरो करतारे
धन्य भाग बस्तीका लोगां सूगन मनावारे ॥ १ ॥ दर्श०
होय केसरिया और कसूबल नर नारी रा वृदोंरे
होडा होडी सब मिल चाल्या धर आनंदो रे ॥ २ ॥ दर्श०
हाथी घोड़ा रथ पालकी कोई मेना पर चढ़ियारे,
सेठ सेनापति और सब कोई पांवां पर परिया रे ॥ ३ ॥ दर्श०
चतुरगी सेन्या सज आया राजा महाराजा भारीरे,
सन्मुख बेठे श्री सोभाचदजी मुनि के खुली खुली सीसनमांबरे ॥द०४

सारी पर्खदा बैठो सामने जिनजीरा गुण गावेरे
प्रभु मुख वाणी सुण कर अति हुलसावेरे ॥ ५ ॥ दर्शन०
केइ बडभागी होय वैरागी संयम का वृत लीधारे
केइ द्वादश वृत आदरियारे ॥ दर्शन० ६ ॥
उगणी सो साल सततरे वैशाख कृष्ण सुभकारीरे
तिथ तेरस ने पुज्य प्रभु का गुण गायारे ॥ दर्सन० ७ ॥

स्तवन श्री महावीर स्वामीनो।

महावीर स्वामी, नैया लगादे मोरी पार हो,
वृषभान स्वामी नैया लगादे मोरी पार ॥ टेर ॥
यो भवजल अथाग भर्यो है,
एक आप तणोरे आधार ॥ हो मा० ॥ १ ॥
कुटुम्ब कबीलो, मतलब को गरजी,
बिन मुतलब नहीं पूछे सार ॥ हो मा० ॥ २ ॥
जो प्राणी जगजाल में फसीयो,
वो खावेला जम की मार ॥ हो म० ॥ ३ ॥
तन धन जोबन बीजु को मल को,
जाता नहीं लागे वार ॥ हो मा० ॥ ४ ॥
आस लगी तो पूरण कीजे,
जन्म मरण निवार ॥ हो मा० ॥ ५ ॥
इम जाणी ने सरण गहु छु,
जिनजी है तारण हार ॥ हो मा० ॥ ६ ॥
चोथमल की अरज सुनी जो,
रानी के कँवार ॥ हो मा० ॥ ७ ॥ सम्पूर्ण

(अथ चौवीसी लिखते)

चतुरविंसजी ने मैं गास्यां माने जिनजी को हे जी माने
प्रभुजी को नाम नीको लागे है माय आछो लागे है माय ॥टेर॥
रिखभ अजित संभव स्वामी,
अभीनन्दन हित हुलरास्या ये माय,
सुमत पदम सू पासजी चदा प्रभुजी,
सू लगन लगास्या हे माय ॥ चतुर० ॥ १ ॥
सुबुद्धि सीतल श्रीयांसजी वास पूज्य,
चरणा चित लास्यां हे माय,
विमल अनत धर्म ध्यान सू सांतीनाथ,
गुण गाय सुख पास्या हे माय ॥ चतुर० ॥ २ ॥
कुंथु अरिजी मल्लीनाथजी मुनी सो व्रत,
गुणा जीव रमास्या हे माय ।
नमीय नेम पार्श्व धणी सांसणपत,
वृधमान मनास्या हे माय ॥ चतुर० ॥ ३ ॥
अनत चौवीसी ने नित नमु गणधर,
सोहु सीस नमास्या हे माय ।
वर्तमानजी ने वदस्या,
परमेष्टी जाप जपास्यां हे माय ॥ चतुर० ॥ ४ ॥
चार वीस जिनराज ने हित चित,
दिल दृढ धर ध्यास्या हे माय ॥ चतुर० ॥ ५ ॥

सारी पर्खदा बैठो सामने जिनजीरा गुण गावेरे
प्रभु मुख वाणी सुण कर अति हुलसावेरे ॥ ५ ॥ दर्शन०
केइ वडभागी होय वैरागी सयम का वृत लीधारे
केइ द्वादश वृत आदरियारे ॥ दर्शन० ६ ॥
उगणी सो साल सततरे वैशाख कृष्ण सुभकारीरे
तिथ तेरस ने पुज्य प्रभु का गुण गायारे ॥ दर्सन० ७ ॥

स्तवन श्री महावीर स्वामीनो।

महावीर स्वामी, नैया लगादे मोरी पार हो,
वृधमान स्वामी नैया लगादे मोरी पार ॥ टेर ॥
यो भवजल अथाग भर्यो है,
एक आप तणेरे आधार ॥ हो मा० ॥ १ ॥
कुटुम्ब कबीलो, मतलब को गरजी,
विन मुतलब नहीं पूछे सार ॥ हो मा० ॥ २ ॥
जो प्राणी जगजाल में फसीयो,
वो खावेला जम की मार ॥ हो म० ॥ ३ ॥
तन धन जोबन वीजु को भल को,
जाता नहीं लागे वार ॥ हो मा० ॥ ४ ॥
आस लगी तो पूरण कीजे,
जन्म मरण निवार ॥ हो मा० ॥ ५ ॥
इम जाणी ने सरण गहुं छु,
जिनजी है तारण हार ॥ हो मा० ॥ ६ ॥
चोथमल की अरज सुनी जो,
त्रुसलादे रानी के कँवार ॥ हो मा० ॥ ७ ॥ सम्पूर्ण

(अथ चौवीसी लिखते)

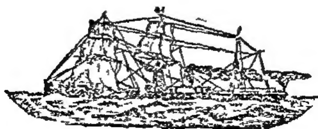
चतुरविंसजी ने मैं गास्यां माने जिनजी को हे जी माने
प्रभुजी को नाम नीको लागे है माय आछो लागे है माय ॥टेर॥
रिखभ अजित संभव स्वामी,
अभीनन्दन हित हुलरास्या ये माय,
सुमत पदम सू पासजी चदा प्रभुजी,
सू कगन लगास्या हे माय ॥ चतुर० ॥ १ ॥
सुबुद्धि सीतल श्रीयांसजी वास पूज्य,
चरण चित लास्यां हे माय,
विमल अनत धर्म ध्यान सू सांतीनाथ,
गुण गाय सुख पास्या हे माय ॥ चतुर० ॥ २ ॥
कुंथु अरिजी मल्लीनाथजी मुनी सो व्रत,
गुणा जीव रमास्या हे माय ।
नमीय नेम पार्श्व धणी सांसणपत,
वृधमान मनास्या हे माय ॥ चतुर० ॥ ३ ॥
अनत चौवीसी ने नित नमु गणधर,
सोहु सीस नमास्या हे माय ।
वर्तमानजी ने वदस्या,
परमेष्टी जाप जपास्यां हे माय ॥ चतुर० ॥ ४ ॥
चार बीस जिनराज ने हित चित,
दिल दृढ धर ध्यास्या हे माय ॥ चतुर० ॥ ५ ॥

॥ स्तवन उपदेसी ॥

भलाई करलेरे बदा २ इण मृन्यलोक के माय
चतुर नर क्यों हो रहा अधा ॥ टेर ॥
यो जग है सपने की माया, तड़को होय आवे ।
राजा रक फकीर बादसाह, मारग पकड़ जावे ॥ भलाई० ॥१॥
थारी तुछ जिंदगानी सुन अभीमानी, सतगुरू की वाणी,
पाणी ऊपर हुवे बुदबुदो फिर पानी को पानी ॥ भलाई० ॥ २
तन धन जोबन रग पतग सम देखत बिलगावे,
जिम वाड़ी में फूल फूलियां छिनमें कुमलावे ॥ भलाई० ॥ ३
मात पिता त्रिया सुत बधु इण से मोह ल्यावे,
काल आण जद गाटी पकड़े बैठो ढलक जावे ॥ भलाई० ॥४
पाप पुरण की खरची लेकर परभव सीधावे,
दुख भुगतणरी विरिया थान कोई न छुड़ावे ॥ भलाई० ॥५॥
तिर्थंकर चक्रीबल देवा मडलीक राया,
वासुदेव अवतार अक्लिय सबी काल खाया ॥ भलाई० ॥६॥
रावण तीन खड को राजा रामत्रिया लायो ।
लिछमण हाथ मराणो रिण में ॥
कवियां मुख गायो ॥ भलाई ॥ ७ ॥
आठ पोर री साठ घड़ी में सुकृत कर लेरे ।
दोय घड़ी प्रभूजी रा भजन री हिरदे धर लेरे ॥ भलाई ॥ ८ ॥
राजा कर्ण हुवा दानेश्वर अजु का कीर्ति गायी है ।
उगता नामज लेवे सबके मन भावे ॥ भलाई ॥ ९ ॥
उगणी से पनरा के वर्षे जोधाणा मांही ।
काती सोहाग पचमी हिमतराम गाई ॥ भलाई ॥ १० ॥

स्तवन प्रभु गुण लिखते ।

आनन्द अग रंग सु प्रभू के गुण गाइये,
जिनेंद्र गुण गाइये प्रभु० टेर ।।
प्रभु के अपार गुण मेरे मन भाइये,
उमंग धरे गावे जाका पाप झर जाइये ।। आनन्द ।। १ ।।
अनग कु विडार एकाग्र चित गाइये,
कसाय के कसायताने दूर हु नसाइये ।। आनन्द ।। २ ।।
ऐसी विद्ध भक्त भाव प्रेम सु रचाइये,
समता की सहेली सग मोज खुब पाइये ।। आनन्द ।। ३ ।।
प्रभु को सुजस जग के तू फरकाइये,
आगम सुध लेहे हम प्रमोदित थाइये ।। आनन्द ।। ४ ।।
प्रभु के समो सरण वादे चल आइये,
देखत दिदार सिर तुरत ही नमाइये ।। आनन्द ।। ५ ।।
प्रभु गुण गावे गीत तीर्थ कर बधाइये,
देखो दास की नर राय तेसे भाव ध्याइये ।। आनन्द ।। ६ ।।
दरस सरस सुख मोकुमी बताइये,
सुजाण कीये आस प्रभु पूर्ण कराइये ।। आनन्द ।। ७ ।।



सेवक की (सूचंना सब भाइयों को देने में आती है) की जिसको पुस्तक मगाने की जरूरत हो उसने हमारे नीचे लिखे पते से मगावे विना मूल्य भेज देते हैं तथा नीचे लीखे उस पुस्तक की तथा उस पाने की चावना होवे सो विना मूल्य भेजते हैं मंगाने की कृपा करे ऐसी हमारी नम्र वीनती करके कहना और पुस्तक को जतना से रखें खुला मुख कर न बाचे ।

१-जैन सास्रमाला तीन ३ भार्गइ
२-सामायक माहा लाभ का पाना

आपका
सिरेमल लालचंद मुथा
पीपाड़ मारवाड
गुलेदगढ